सूत्रधार-(रंगभूमि की ओर देख कर) आहाहाहा-आज बड़े आनन्द का विषय है कि ऐसे २ शुद्ध मानस उदार चित्त इस स्थान पर एकत्रित हुए हैं तो क्यों न ऐसा अभिनय दिखाया जावै कि जिस से उनको उचित उपदेश मिले जिससे सांसारिक मायावी जनों के वाग्जाल से बचे रहैं (ठहर कर) आह ! विचार में तो विलम्ब हो रहा है कार्यारम्भ शीघ्र ही होना चाहिये (चौंक कर) वाह २ खूब ! यह लो ! (कान लगा कर सुनता है) ऐं यह (खड़ाऊं पर कौन आ रहा है) क्या गो स्वामी जी के पात्र का वेश धारी आ पहुंचा । (दूसरे ओर देख कर) अरे इनके दर्शनाभिलाषी जन भी आ गये बस तुम चुपके से एक बगल खड़े हो कर आनन्द लो । (देख कर स्तुति करता है)

आये मेरे नन्द नन्दन के प्यारे ॥ टे० ॥ माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे । ना जानो इत कौन पुरुष वस जो ढिग आइ पधारे ॥ परमानन्द सबी न्यौछावर वार २ तन पै बलिहारे ॥ १ ॥

(आइये महाराज इस सिंहासन पर विराजिये)
(गो स्वामी जी विराजते हैं)

पुच्छन्दाच

सू०—महाराज गोलोक वासी आप के दर्शनार्थ आये से दीखतेहैं मगर शायद झापटिया नहीं आने देता॥

गो०—झापटिया से कहो उन्हे आने देवै॥

(सूत्रधार वहीं रह गया)

(झापटिया का प्रवेश मय दर्शकों के)

झा०—महाराजाधिराज स्वामी के दर्शक यह उपस्थित हैं कृपा दृष्टि कीजिये॥

(दर्शकगण दंडवत करके अस्तुति करते हैं)

चौ युग वेद बचन विस्तार्यो ॥ टे० ॥ सतयुग
स्वेत वराह रूप धरि हाटक लोचन मार्यो ।
त्रेता राम रूप दशरथ घर रावनवंश सङ्घार्यो ॥
द्वापर मह वसुदेव देवकी सुत ह्वै ब्रजहि उबार्यो ।
अबतो श्री बल्लभकुल प्रगटे मायावाद निवार्यो ॥
हमआये प्रभु गकुलेश्वर्ति अधमजान भवतार्यो ।
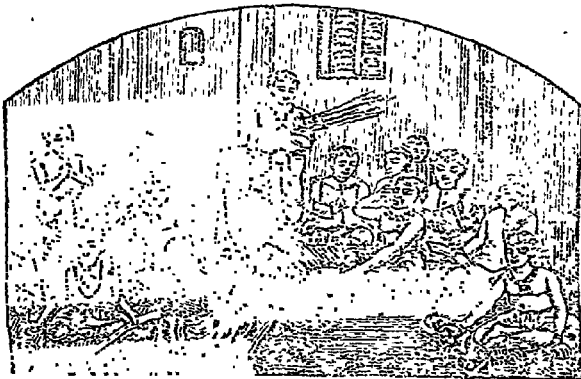
गो०—(प्रसन्न होकर)—तुम सब लोग धन्य हो, तुम में निष्ठा गुरु भक्ति की वृद्धि हो । ऐसे ही जीवों से

धर्म का पालन व प्रचार होता है जो इस संप्रदाय के निन्दक हैं वे द्विजन्मा सदृश हैं । धर्म की चर्चा में निष्ठ। तथा संप्रदाय इतिहास की जिज्ञासा धर्म के प्रधान लक्षण हैं इससे निज मार्ग की कुछ कथा सुनो ॥

गो०ब्रा०—हां महाराज वेदहू तो श्री मुख से प्रगटे ऐसे येहू श्री जू के मुखारविन्द से निकलैंगे ॥

गो०—जो हम कथन करते हैं उसे वेद वाक्यही जानना ॥

इत्थंवन्द्यङ्घ्रिमिताव्दकात्समभवज्जक्ष्मीरुपवत्याःपति
र्वामोविष्णुहरीचसत्कृतियुतौ श्रीज्ञानवासूतथा ॥
विल्वान्मङ्गलकाख्यसद्गुणयुतः श्रीवल्लभाख्यःक्रमात्
नोचंनोक्षमथोगुणंघनणौनोचंसमाःस्युस्तव॥ १॥
मन्त्यःपञ्चगुणोप्युभूमितशके जातःसुधीरोमहान् ।
यस्मैभूतभवीगुणा दधिरद्भज्ज्ञानं परंमङ्गलम् ॥
स्वस्मात्पूर्वउदार धीरहरहो विष्णोविलग्नाशयः ।
देवान्तानिचयेदधुर्मतिधरानामानिरूपाणिच ॥२॥

अथ श्रीवल्लभाचार्य सम्प्रदाय प्रवृत्यष्टकम्।

श्रीवामदेवोधीरात्मा स्वामीसत्यव्रतांवरः।
पञ्चाग्न्यङ्कमितेवर्षे जातोरूपवतीपतिः॥१॥

सनिनायसुखंलोके षष्टिसम्वत्सरान्मुनिः।
तस्यपुत्रोऽभवद्विष्णु स्वामीलोकहितेरतः॥२॥

सोजीवत्सप्ततिसमाः कृष्णभक्ति प्रवर्त्तकः।
तस्यशिष्योहरीराय स्त्रिपञ्चाशत्समाःप्रभु॥३॥

शरीरंपालयामास भक्तानांभक्तिवर्द्धनम्।
ज्ञानदेवसुतस्तस्यचतुर्श्चैकादशा४४ब्दकान्॥४॥

तस्यपुत्रोवासुदेवः पञ्चाशद्वत्सरान्भुवि।
उषित्वाभक्तिमद्वयर्थ्यं ततःस्वर्गंजगामसः॥५॥

तस्यशिष्योभवद्वीरो बिल्वमङ्गल देवकः।
परंगतोभुतयोनिं षष्टिवत्सर जीवनात्॥६॥

सउपदिदेशभूतात्मा बल्लभंकृष्णवल्लभम्।
कृष्णोऽविनाशिनीभक्तिंतारिणीदुर्गसागरात्॥७॥

सवल्लभो महायोगी शास्त्रतत्व विचक्षणः ।
भावंवैकुण्ठपादाब्जे योजयामाससर्वतः ॥८॥
अष्टकं विट्ठलकृतं प्रयतो यः पठेन्नरः ।
श्रीकृष्णेच परांभक्तिं लभतेव न संशयः ॥९॥

श्रीविट्ठलमष्टकम् समाप्तम् ।

यहां लों तो पूर्वाचारियों की कथा कही गई अतः पश्चात् महा प्रभु वल्लभाचारीजी का इतिहास जोकि स्वर्ग से वेल्यूपेवुल भेजा गयाथा उसे भी कान खड़ाकर सुनिये ॥

एकमेवाऽद्वितयंब्रह्म--श्रीकृष्णःशरणंमम श्रीसहस्र परिवत्सरमितकालजात कृष्णवियोगजनितपक्ले- शानंततिरोभावोहं तद्वियोगजनितत्योरंयथानाम भगवतेश्रीकृष्णाय श्रीगोपीजनवल्लभाय देहेंद्रिय प्राणांतःकरणांनि द्वाविमौ पुरुषोदासौसंपूज्यौ सखायौकामपूर्वका अरुधर्मकामास्तु नित्यध- र्मांश्च दारागार पुत्राप्तेवित्तेहं परायात्मनासह समर्पयामि दासोहंकृष्णतवास्मि ॥

टीका ।

श्रावणस्यामलेपक्षे एकादश्यांमहानिशि । साक्षात् भगवताप्रोक्तं तदक्षरसमुच्यते ॥ १ ॥ ब्रह्मसंबंधकारणात् सर्वेषांदेहजीवयोः । सर्वदोषनिवृत्तिर्हिदोषाःपंचविधास्मृताः ॥ २ ॥ सहजादेशकालोत्था लोकवेदनिरूपिताः । संयोगजास्पर्शजाश्च नमंतव्याकदाचन ॥ ३ ॥ अन्यथासर्वदोषाणां ननिवृत्तिःकथंचन । असमर्पितवस्तूनांतस्माद्वर्जनमाचरेत् ॥ ४ ॥ निवेदिभिःसमर्प्यैव सर्वंकुर्य्यादितिस्थितिः । नमनं देवदेवस्य स्वामिभुक्त समर्पणम् ॥ ५ ॥ तस्मादादौसर्वकार्ये सर्ववस्तु समर्पणम् । दत्तोपहारवचनं तथाचसकलंहरेः ॥ ६ ॥ नग्राह्यमितिवाक्यं हिभिन्नमार्गपरंमतं । सेवकानां यथालोके व्यवहारःप्रसिद्ध्यति ॥ ७ ॥ तथाकार्यं समर्प्यैव सर्वेषांब्रह्मतातत: । गंगात्वंसर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णनात् ॥ ८ ॥ गगात्वेननिरूपास्यात्तद्वदेयापिचैवही ४८ ॥

(श्रीर श्रवण करो दूसरी वार्ता)

श्रीमद्गुरोपादतलाश्रयस्ततोनिवेदनंवित्तशरीरचेतसां ।
तत्पादुकायांभजनंभगेरतिः स्त्रिभिःसमंपानमनंतसौहृदं ॥
परस्परंभाव्यमहर्निशंरतिः स्त्रीभिःसमंपान मनन्तसौहृदं ।
श्रीगोकुलेशार्पितचेतसां नृणांरीतिःपरासुंदरिसारवेदिनां ॥

यत्पादुका पूजनधर्म मुख्यो सुतास्नुषादार समर्पणंच।
चक्रांकितानांभुविवैष्णवानां रात्रौदिवायांसुरतंददाति॥१॥

(और सुनो) गोकुलनाथजू ने कह्यो है।

तस्मादादौसोपभोगात्पूर्वमेव सर्ववस्तुपदेन भार्यापुत्रादीनामपि समर्पणंकर्तव्यं विवाहानन्तरंस्वोपभोगेसर्वकार्यं सर्वकार्यानिमित्तं तत्तत्कार्योपभोगि वस्तुसमर्पणम्कार्यं समर्पणमकृत्वापश्चात्तानितानि कार्याणिकर्त्तव्यानित्यर्थः॥

इति वेदादिसिद्धांतकल्पे वैष्णवमतमंडने
प्रथमःपरिच्छेदः॥

जो लोग इन बातों को सत्य मान कर श्रवण करैंगे वह हमारी (स्पेशल) ट्रेनमें निस्संदेह बेलून द्वारा अवश्य गो लोक जांयगे॥

जब कथा समाप्त भई तब गोसांईजी ब्रह्मभाख्यान गाने लगे॥

इतनीकथासुन गोलोकवासी सब निजधामको सिधारे किन्तु विवेकी पुच्छ दास तन मन रोगी होने के कारण महाराज गोस्वामी जी के सामने बैठा रह गया और विनय पूर्वक दंडवत कर अंजलि जोड़ बोला महाराज!

मेरे बाप दादे से आज तक सब श्री महाराज के शिष्य होते आये हैं मो सरीखे जितने जन हैं वो सबही जैंराज जू के शिष्य हैं यासों मेरो इतनो निवेदनहै कि ऐसे यत्न से मोकूं मिलैं यासों या पिंड रोगी पन सों मेरो उद्धार हो जावै और मोकूं परमानन्द होय ॥

गो० —(सुन कर बोले) पुच्छदास ! तूनो मोकू बड़ो भक्त दीखैहै । जाते तेरो कल्याण उपाय मैं सोच देऊं हूं (जोर से पुकारा । खवास ३)

ख०—जो आज्ञा महाराज की ॥

गो०—खवास–जा तू चांदी की प्रसादीं डिब्बी सूं पवित्र केशन कू निकाल ला ॥

ख०—जो आज्ञा महाराज केश ले आयो ॥

गो० —भक्त पुच्छ दास ! ले इन केशन कूं तू तावीज में मढ़ाय के गले में सदा कूं बांध ले और कछूक दिन लो मेरो सत्सङ्ग कर तो तोकूं मैं बहुतेरी कथा सुनाऊंगो जासों मेरे स्वरूप को तोकूं यथार्थ ज्ञान हो जाय । और अपने अपर बान्धवन कूं जो तेरे सरीखे भक्त हैं उनको भी उपदेश दीजियो और मेरे यथार्थ स्वरूप को ज्ञान सिखाइयो ॥

पु०—धन्य महाराज क्यों न हो तुम से ज्ञानीनकी बार्ता सुन कौन को न अज्ञान हटै ! मेरो जीवन आज धन्य होय गयो । महाराज श्री मुख से अब यह सुनबे की अभिलाषा है कि मोकू किनके २ दर्शन करने पड़ेंगे ? कौन २ तीर्थ करनो होयगो ? सो इन सबको संक्षेप वृत्तान्त मोसूं कथन करो ॥

गो०—देख तोकूं मैं सब क्रम सों जैसो कि श्री नाथ जी के प्रागटमें लिखोहै उन स्वरूपनको दर्शन कराऊंहूं॥

पु०—(प्रसन्न हो) पहिले किनके दर्शन होंयगे ॥

गो०—पहिले मैं वा स्वरूप को दर्शन कराऊंगो जा स-मय श्री नाथ जी गाड़ा में विराज अपनी गंगाबाई के सहित चले आ रहे हैं जब रात में श्री महादेव जी मसाल जोर दिखावन लगेहैं वाही चित्रकूदेख ॥

पु०—वाह महाराज तो दिखाओ ॥

गो०—देख । (चित्र देखता है ३)

यह सवारी गाड़ा पर श्री नाथ जी की है और पासही गङ्गाबाई खतरानी बेठी है और गाड़ा रोक कर गुसांई जी पूछते हैं घोड़ा पर चढ़े हुये और कहते हैं कि सिंहाड़ यहीहै गङ्गा बाई पूछो श्री नाथ जी की क्या इच्छा है जयराज श्री नाथ जी की इच्छा यहीं की है। वाह जी गङ्गाबाई तेरा इत्ता मान और महादेव जी विचारे मशालची रहे धन्य है॥
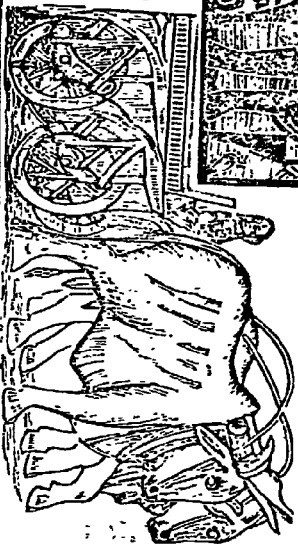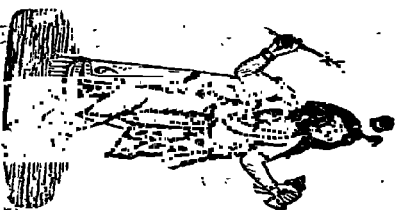
पु०-(चित्र देख) दंडवत करने लगा। वाह २ धन्य अब मेरो जन्म सुफल भयो ॥

गो०—अब किनको दर्शन करनो चहै है ॥

पु०—महाराज वा समय के श्री नाथजू के दर्शन कराइये जब कि सूरत को परे व्रजबासीके संग भेट उगाहन को गये हैं ॥

गो०—भाई तू तो बड़ो अनन्य अनुभवी है। पूछे है तो दिखाइ दैंयगे। देख ॥

पु०—वाह ३ धन्य नाथ खूब। फिर बोला महाराज मेरी बड़ी इच्छा है कि मोको वा मन्दिरकी झांकी दिखाय देते जो 'सिहाड़' (मेवाड़ महाराणा साहब की राजधानी) में बन्यौ है ॥

गो०—भाई तूतो बड़ो पक्को श्रोता है। तू ने बड़ी पुरानी २ कथा सुन रक्खी है। अच्छा ले वाऊ के दर्शन कर ॥

पु० —ठीक अनोमान मन्दिर सोन है । वाह !
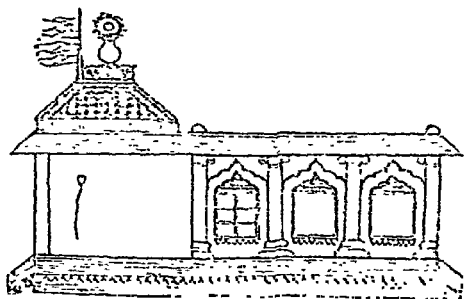
गो०—कह अव तेरी कहा इच्छा है ॥

पु०-महाराज मेरो अभीष्ट तो अव यह है कि जो आप की कृपा सो वा हाथीदांत वाली प्रतिमा के जोकि कांकरौली के शय्या मन्दिर में विराजमान है वाके दर्शन होय तो अहो भाग्य ! मेरो यह विचार है कि वा प्रतिमा के दर्शन यहीं होंय तो सुफल जीवन होय क्योंकि वैष्णवन कूं इनकी झांकी नाय होत है यासूं बड़ी उत्कंठा है ॥

गो०—पुरुष दास तू तो बड़ो दर्शी है । तोकूं मेरे मारगकी बड़ी खबर है । तू सब जाने है मैं यासों तोकूं सब बताऊंगो—पूछ ॥

पु—तो मोय वा चित्र के दर्शन देव ॥

गो०—कर दर्शन देख यही राधिकाजू को स्वरूपहै न ॥

पु०—ठीक २ यही चित्रहै । धन्य, (हाथ जोड़ हंसताहै)

गो०—पुच्छदास तो ते मैं बड़ो प्रसन्न हूं कह तो तोकूं लोक पूज्य कराय दूं । तेरी या उलूक जिवनिका छोड़ाय दिव्य देह कराय दूं ॥

पु०—वाह महाराज ! बड़ी अनोखी वात कही । ऐसे या कारज को होनोतो असंभवहै । आपने तो कितेकन की काया पलट कराई होयगी । फिर महाराज मैं सब जीवन में अधम हूं संसार में मोय कोऊ अपने घर पर बैठनहू तक न देत है । सो ऐसो करो तो बड़ी कृपा होय । पर महाराज ऐसो हाल कौन से भक्त को आपने कियो सो मोकूं सुनाय दो ॥

गो०—पुच्छदास हमसे महात्मन के वाक्य में संदेह न उपजायो कर। वा सन्देह सों भक्ति को नाश होय है। सुन नरन में पामर धोवी तक को तो पूज्य कराय दियो और का चहिये ॥

पु०—महाराज कहो वो कौन और कहांको धोवी हतो। कहां और कैसे औ कौन सूं पूजो जाय है ॥

गो०—सुन हमारे पूर्व जन को दास श्री महा प्रभूजी के छोटेलाल जी श्री विट्ठलनाथ जी को एक धोवी वस्त्र धोतो रहो। एक समय की बात है कि वो बड़ो सुन्दर वस्त्र धोय लायो जापै विट्ठलनाथ जी बड़े प्रसन्न भये और बोले कि मांग मोंसू जो तोय मांगनों होय। तब वा धोवी हाथ जोड़ बोल्यो कि महाराज जो ऐसी कृपा है तो मेरे ४ भुजा हो जांय, यापै लाल जी के मुख सूं 'तथास्तु' के कहते वो चार भुजा को होय गयो और आज लौं ईश्वर बनो 'मेरता' (जोधपुर की राजधानी में ग्राम) में आज लों पूजो जातो है ॥

पु०—धन्य महाराज! मोकूं तो उनको दर्शन जब मेरता जाऊं तब होय पर वा धोवी के दर्शन यहीं मिल जांय तो बड़ी कृपा होय ॥

गो०—अच्छा तोकूं वाके दर्सन यहीं कराऊंहूं देख सावधान होय अवलोकन कर ॥

पु०—जय धोबी जू की—वाह ३—

गो०—पुच्छ दास कैसो चित्र है ?

पु०—महाराज मेरो जीवन कृतार्थ भयो, मैं अब अधिक दूर लों देखने लगो, झांकी में दिन चला गयो पर आनन्द के कारण अब मोय तीक्ष्ण दृष्टि प्राप्त होन लगी, अब ऐसो यत्न कहो कि अन्तःकरण निर्मल हो जाय ॥

गो०—अच्छा तो अन्तःकरण तो केवल झांकी द्वारा कबहुं नाय शुद्ध होय है ॥

पु०—महाराज तो का उपाय कीजिये ॥

गो० —(सोच कर) रास विलास में हांस त्याग खास परिहास को भास लै जक्त की व्यर्थ आस ना कर प्रेम फन्द में जीवन का फांस तव अन्तःकरण निर्मल होय ॥

पु० —अहाहाहाम हाराज मैं यही करूंगो, मोय रासलीला को सुखानुभव कराय दीजिये ॥

गो०--भक्तपुच्छदास! देह को विमल करले (आज्ञा दिया और मृदङ्ग बजी मिली लय का सुस्वर गूंज उठा और एक राधा और एक कृष्ण लगे नाचने) ॥

पु०--जय २ महाराज ताथेई ३ जयराधे २ (कुछ रुक कर धीरे से गोसाईं जी से बोला) महाराज वा रास की लीला दिखाओ जो हैदराबाद में बंकटीदास वालेन के ढिग हुआ था जो राजा साहब के नाम सूं बजै हैं ॥

गो०--जो तेरी इच्छा इतनी मात्र है तो वा स्वरूप के भी दर्शन तोकूं मिलैंगे, देखले वोही आनन्द आवैगो सावधान हो पुच्छदास ठीक वही झांकी है ॥

पु०--अनोमान वही है महाराज ऐसो विलास आजलों ना देखो (वाह २ कह कर पृथ्वी पर लोटगया) (राधा कृष्ण गान कर सुस्वर की कलकुजन कर बायु गुंजार करने लगे) ॥

यह वही चित्र है जो निजाम् हैदराबाद में राम की शृ-ङ्गार कर फोटो उतरवाया था ॥

शेर ।

आपट पुरुषो तुम जो बोलो कृषा जो वो कान में ।
अपने पुरखों की प्रशंसा सब करो कोइ तान में ॥
जो थे मिथ्या कृषा वो बोले सभों से गान में ।
जो कहैं हम वो सुनो तुम सत्य लाओ ध्यानमें ॥

दोहा ।

अति दयाल वल्लभ प्रभु, लायो फल विट्ठलेश ।
शाखा सब बालक भए, पार न पावत शेश ॥

कबित्त ।

पुरखा हमारे अब तारह्न से भारे जग जीवन को तारे सोम यज्ञ विस्तारे हैं ॥ तिन के प्रशंसनीय यश अमनीय कह्नं सुनो सुनो जामें जांय पातक तुमारे हैं ॥ भट्ट श्रीनारायणजू वेद अवतार भये सोम यज्ञ बत्तीस किये ये निरधारे हैं ॥ गङ्गाधर भट्ट अवतार गङ्गाधरही को आठवास यज्ञ कर स्वर्ग को सिधारे हैं ॥ १ ॥

गणपति भट्ट अवतार गणपतिही को। सोम यज्ञ तीस कीन्हें जग यश छायो है ॥ भये अवतार ललिता को भट्ट गणपत जू पांच यज्ञ कीन्हों भक्ति मारग चलायो है ॥ ब्रह्म को अनादि वेद अक्षर बतावत है ताको अवतार भट्ट लखन बतायो है ॥ सोमयज्ञ कीन्हें पांच मानो बात सबै सांच काग पूंछ सुन के न काहू ने हिलायो है ॥ २ ॥

या विधि बड़ाई लै सुनाई सब लोगन को चेलन के हिये बात सांचीसो दृढ़ाई है ॥ जेते जग जीव बात सुन के न माने हमें ईश्वर से बुरो ताकि छार मुख लाई है ॥ बड़े ते बहिर मुख न देखैंगे वाकू मुख कूर औ कपूत खोटी सकल कमाई है ॥ आवै मेरी शरन चरन लपटानो रहै चारहूवरण को यह रीति दरशाई है ॥ ३ ॥

मनसुखोवाच ।

शेर ।

वैष्णवो समझो जरा मुझको जलाने के लिये ।
ये तुम्हें बहकाते हैं माया मंगाने के लिये ॥
चोरी कि भागे हमें और तुमको तानेके लिये ।
भेष ईश्वर का बनाते हैं दिखाने के लिये ॥

कवित्त ।

हैदराबाद मांहि राजा वंकटो सुदास वल्लभी गुसाइन के भक्त अभिराम हैं ॥ तिनहीं के गेह में बने राधे बालकृष्ण भाई जो गोपाल सो तो बने घनश्यामहैं ॥ रहस रचायो सो दिखायो सब लोगन को शोभा लखि ललित लजात रति काम हैं ॥ यवन निहारे रहे काम मर मारे ये गुसैयन के काम के भवैयन के काम हैं ॥ ४ ॥

गिरधर लाल दन्तवक्र बने पूतना हैं यशोदा जी बने कल्यान राय नाम है ॥ ललित स्वरूप मकसूदन ललित लसे रोहणी बने हैं व्रजनाथ सुख धाम है ॥ नन्द जी को रूप परषोत्तम गुसाई बने ताल औ मृदंग बजे ललित ललाम है ॥ कुटुम्बसमेत नचेहैं धार घा घरो को ये गुसैयन के काम के भवैयन के काम हैं ॥ ५ ॥

ऐसे २ काम करैं ताहू पै न लाज धरैं यमको न त्रास अमरौतो मानो खाई है ॥ अंजन औ मञ्जन सों रूपको सम्हारत हैं केश को सुधारैं अभिमान अधिकाई है ॥ भाई को बनाय नारी आप चुम्बनादि करैं लोगन दिखावैं मानो यज्ञ की काराई है ॥ ऐसे २ यश जग जाहिर भये हैं तातें थूकतहैं तुम्हैं सब लोग औ लुगाई है ॥६॥

अमल अनूप पाद पङ्कज सें जावका है पायजेब काड़ा छड़ा घूंघरू ललाम है ॥ घेरदार घांघरो सुजंघन को घेरि रह्यो लखि कटि केहरी बनायो बन धाम है ॥ नाभि औ गंभीर तामें भ्रमर भ्रमात रहै त्रिवलीन को निहारै मदमाते बने काम है ॥ बुलाकट निहारो भयो उर सुख भारो ये गुसैयन कि काम कै भवैयन की काम है ॥७॥

लखत मुखचन्द द्युति मन्द होत भृकुटी निहार हार मानो धनुकाम है ॥ नयन निहारे रतिनाथ सरहारे कंचुकी निहारे मीन नीर कीन्हों धामहै । शुकहू विचारे हारे नासिका निहारे अरु दाड़िम दरारे खात दांतन के नाम है ॥ बुलाकट निहार भाखो कछु शिंगार ये गुसैयन के काम कै भवैयन कैं काम है ॥ ८ ॥

नाथ द्वारे जायं मांग मोती से भराय भेष नारी को बनाय अथ बैठे अभिराम हैं ॥ नैनन की शोभा कहें ऐसो कवि कोभा देख सबनहू को लोभा मन में ना शर्म आप बैठे बन बाम हैं ॥ भूषन औ बस्त्रन की शोभाही अनूप बनी देख रूप भूपहू लुभाने धन धाम हैं ॥ लूकाट विचारो मदा पूछतही हारो ये गुसैंयन के काम कै भवैयन के काम हैं ॥ ९ ॥

धारि रूप नारी को नाचे सु गेह गेहन में धिक २ भाखैं सबै ऐसी जिन्दगानी में ॥ केशहू सुधारे मिस्सी सुरमाहू सारें तीखे नैनन निहारे रहे सदा सुख सानी में ॥ चाव कर गावैं नाचैं औरहिं नचावैं आवै नहिं चित्त नेक हरि की कहानी में ॥ ऐसे २ काम करैं गुरू निज नाम धरैं यासों बूड़ क्यों न मरो उल्लू चुल्लूभरे पानीमें १० ॥

ख्याल रंगत महराज की रास ।

श्री गो स्वामी पुरुसोत्तमजी की लीला, महाराज रास लीलाका सुनो सब हाल । करके रास बिलास बस किये रंक और महिपाल ॥ टेक ॥

दक्षिण को गये सब ले कुटुम्ब अपना महाराज जाय की लीला भारी जी । सुनो लगा कर कान कथा सब

हमसे सारी जी ॥ श्री गोस्वामी गोपाल लाल की लीला महाराज बने वो कृष्ण विहारी जी । बालकृष्ण जी बने सुघर वृषभान दुलारी जी ॥

शेर—अब सुनो आगे जिकर फिर रास उन जैसा किया ।
सेठ साहूकार जितने मोह मन सब का लिया ॥
रूप राधा कृष्ण का बन दरस चेलों को दिया ।
चेलियां भी खुश हुईं रस प्रेम का प्याला पिया ॥

तोड़ा—हैदराबाद के जो थे देखो नामी ।
बंसटीदास घर रास किया जा स्वामी ॥

महाराज कपट का जाय बिछाया जाल, करके० ॥ १ ॥

फिर कृष्ण बने गोपाललाल यदुराई, महाराज ढंग क्या नये निकाले जी । मोर मुकुट धर शीश कान में कुण्डल डाले जी ॥ कर तिलक भाल केशर का मस्तक ऊपर, महाराज बाल वो घूंघर वाले जी । डाल मसाला इतर बनाये काले काले जी ॥

शेर—आंख में सुरमा लगा बंशी को लै अधरन धरी ।
साध के सुर ग्राम गाई रागिनी वो रस भरी ॥
माल वैजंती गले में डाल सुध सब की हरी ।
काछनी कटि में पीताम्बर की बनाकर के करी ॥

तोड़ा—हाथों में डाले कड़े बिजल कंचन के ।
पैरों में घुंघुरू छम छम छनन छनके ॥

महाराज नाचते थेइ थेइ दे कर ताल, करके० ॥ २ ॥

फिर बन के राधे बालकृष्ण जी नाचे, महाराज किया सब नख शिख से शिंगार। मांग मोतियों भरी लिया नैनन में कजरा सार॥ मस्तक पर बेना बंदी बिंदी काली, महाराज झूमका करनफूल पुरकार। नाक में नथुनी नकबेशर लटकन की अजब बहार॥

शैर—कान में पहने वो वाले वालियां यकशान की।
होठ पर मिस्सी लगाई और लाली पान की॥
फिर लगे हंस हंस के गाने तान वो रस खानकी।
जान बलिहारी लगे सब माधुरी मुसक्यान की॥

तोड़ा—हैकल हमेल गलहार पचलड़ी डाली।
धुकधुकी वो चंपाकली वो सांचे ढाली॥
महाराज वो दुलरी तिलरी मोतिन माला, करके० ॥३॥

अंगिया रेशम की पहिनी कुरती चोली, महाराज कुचा मन हरन बनाई जी। भुज पै बाजूबन्द नौरतन की छवि छाई जी। कर में कंकन पहुंची औ चुड़िया डाली, महाराज वो मिहदी लाल रचाई जो॥

शैर—ओढ़ली चुनरी वो सिरसे घांघरा पहिनावोलाल।
पांव में पायल व बिछवे छड़े डाले हैं विशाल॥
बांध के घुंघुरू छमाछम नाचने लग गये कृपाल।
बज रहा मिरदंग सारंगी मजीरा गत कमाल॥

तोड़ा—सोरठ बिहाग भैरवी सिंध परभाती।
जो बनी सखी संग सुघर सहेली गाती॥
महराज निछावर करैं लोग धन माल, करके० ॥ ४ ॥

फिर उठ कर श्री गोपाल लाल गो स्वामी, महाराज गले राधा को लगाते जी। राग रागिनी साध के सुर हर रंगके गातेजी। आंखें मटकाते और पेडूफड़काते जी॥ महाराज थिरक कर नाच दिखाते जी। मुसलमान सब खड़े देखते भाव बताते जी॥

शैर—क्या यही अचारियों का धर्म है बतलाइये।
बस लिखा किस ग्रंथमें लाकर जरा दिखलाइये॥
वेद में या शास्त्र में कह कर कथा समझाइये।
कौन नाचे हैं ऋषी फरमाइये फरमाइये॥

तोड़ा—ये भांड़ पतुरियों का पेशा है स्वामी।
तुम कहलाते हो गुरू गुसाईं नामी॥

महराज छोड़ दो अपनी चाल कुचाल, करके रास विलास बस किये रंक और महिपाल॥ ५॥

क्या धर्म धरम ये है गुरुओं का कहिये, महराज धर्म क्या यही सिखावोगे। कैसे इन भेड़ों को पार सागर के लगावोगे॥ ये हैं अंधे सब भोले शिष्य तुम्हारे महाराज कैसे गोलोक पठावोगे। या इनको संग ले के डूब अधबीच में जावोगे॥

शैर—धर्म का उपदेश सब चेलों को अपने दीजिये।
पार भवसागर के स्वामी नाव इनकी कीजिये॥
रामरस इनको पिला कर आप स्वामी पीजिये।
धर्म का डंका बजा के जगत में यश लीजिये॥

तोड़ा—मत अधर्म करके माल बहुतसा जोड़ो ।
कहता हूं स्वामी अधर्म करना छोड़ो ॥
महाराज ठगो मत नित चेलों का माल, करके० ॥ ६ ॥

थे सिरी कृष्ण रणधीर वीर अति योधा, महराज कंस का मान ढहाया जी, जुरासिंधु औ कालयमन को मार गिराया जी ॥ भौमासुर वाणासुर को रण में जीता, महराज धर्म का पंथ चलाया जी, अधर्मियों को कुल समेत यम लोक पठाया जी ॥

शैर—क्या लिखा गीता के अन्दर नाचना भी धर्म है ।
आंख मटकाना बताना भाव भी शुभ कर्म है ॥
नकल करते कृष्ण की तुमको नहीं कुछ शर्म है ।
नर्क में डालेंगे जम धरती जहां की गर्म है ॥

तोड़ा—थे चौदा भवनके बीच कृष्ण विख्याता ।
और चार वेद षटशास्त्रके थे वो ज्ञाता ॥
महराज विलाकट कहैं सुनो गोपाल, करके रास विलास बस किये रंक और महिपाल ॥ ७ ॥

दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजा ।
दशध्वजसमोवेसो दशवेसासमोनृपः ॥

जो भेष बदल कर धोखा देते हैं वह इस श्लोक के प्रमाण से पतित समझे जाते हैं ॥ मनु० अ० ४ श० ८५

फिर कृष्ण उवाच ख्याल रंगत खड़ी।

लाल आंखकर उठे लालजी झपटके धमकी बतलाई।
क्यों रे मंसुखा करे बुराई मति तेरी क्या बौराई॥ टे०॥
सतयुग में धर मच्छरूप मैं शंखासुर को किया हतन।
कच्छ रूपधर मथा समुन्दर प्रगट कर दिये चौदा रतन॥
बन के वारहा रूप मही मैं उठाय ली दांतों पे धरन।
और धार नरसिंह रूप हिरनाकुश का मैं फाड़ा तन॥

शेर—धर के बावन रूप मैंने जाय के बल को छला।
छल के सब सरवस लिया पाताल को भेजा भला॥
धार के फरसा है मैंने क्षत्रियों का दल दला।
मार करके राज छीना दी दिखा अपनी कला॥

भुजा सहस्रा बाहु की मैं ने काट धूल कर दी भाई।
क्यों रे! मंसुखा करे बुराई मति तेरी क्या बौराई॥१॥

राम रूप धर मैं ने देखो धनुष बान कर में धारा।
कुम्भकरण को जीत लिया औ पिशाच रावणको मारा॥
फिर मैं ने बन कृष्ण रूप औ ब्रज मंडल में पग धारा।
केलि किया गोपियोंके संग में अधम पापियोंको तारा॥

शेर—ग्रंथ जो ये है हमारा सब गुनों की खान है।
है यही उत्तम सबों से स्वर्ग का अस्थान है॥
ज्ञान है इसमें भरा बस प्राण का ये प्रान है।
जो नहीं मानैगा चेला बस वही शैतान है॥

श्रद्धा से मानों सब शिष्यो ग्रंथ यही है सुखदाई।
क्यों रे ! मंसुखा करे बुराई मति तेरी क्या बौराई ॥२॥
शिष्य हमारा हो के अन्य मारगी से करता भाषन।
वोही पापी निन्दक समझो मत देखो उसका आनन ॥
और हमारा होके चेला अन्य शास्त्र जो लगे पढ़न।
बहिर मुख्य तू समझ मंसुखा सत्य २ मैं कहूं बचन ॥
शैर—अपनी स्त्री के अर्पनमें जिसको देख गिलान है।
बस वही पापी समझ अज्ञान है नादान है ॥
हैं हमी ईश्वर हमारा सब जगह परमान है।
हैं हमी सब से बड़े तूं क्यों हुआ अज्ञान है ॥
बिना हमारे मोक्ष न होगी सुनो सभा सब चित लाई।
क्यों रे ! मंसुखा करे बुराई मति तेरी क्या बौराई ॥३॥
जो प्रतिमाहै सुनो हमारी वो प्रतिमाहै अजर अमर।
ज्ञान भाव सब को बतलाती औ देती शिष्यों को बर ॥
और मतोंकी प्रतिमा जितनी उनमें नहि कुछ जरा असर।
तांबा पीतल लोहा मिट्टी काष्ठ और होगी पत्थर ॥
शैर—मंत्र हम जिनको सुनावैं हैं वैष्णव वो मुकर।
अन्य मत के हैं जो चेले हैं वोही वेदुम के खर ॥
जो हमाराहै तिलक जिसके लगा जमका न डर।
और जितने हैं तिलक पाखंडियों के है मगर ॥
कहैं बिलाकट सुन रे मनसुख भला हुआ क्यों सौदाई।
क्यों रे ! मनसुखा करै बुराई मति तेरी क्या बौराई ॥४॥

ख्याल रंगत खड़ी फिर मनसुखा।

हाथ उठा के कहे मंसुखा सुनो सज्जनों ! चितलाई।
जाल में इन के कोई न फंसना ये कलियुग के हैं भाई॥
परम्परा से पुरुखा इन के धोखा दे के हरते धन।
उन्हीं की ये संतान हैं यारो ! नाच रहे हैं जो बनठन॥
हैं ये मिथ्या कृष्ण सुनो मैं सत्य २ कहता हूं बचन।
और बनाई जाली राधा साज के तन पर आभूषन॥

शेर—भांड जैसे नाचते हैं वास्ते कलदार के।
सब सुनो हिन्दू मुसल्मां मैं कहूं ललकार के॥
कर रहे नट की ये लीला भेष अद्भुत धार के।
दे रहे सब को ये धोखा बीच में संसार के॥
हैं ये धर्मी पहले सिरे के नहिं त्यागैं चाची ताई।
जाल में इनके कोई न फंसना हैं ये कलियुग के भाई॥१॥

परमधर्म क्या अचारियों का यही लगा के कान सुनो।
यही गुरू क्या कर सकते हैं भारत का कल्यान सुनो॥
भोले भाले कान फुकावा ये जो भेड़ धसान सुनो।
नहीं तरेंगे डूब जायगे डूबे ज्यों पाखान सुनो॥
शेर—जो फंसे हैं बैश्नव आ इन ठगों के जाल में।
है भरा बिलकुल कपट व्यवहार इनकी चाल में॥
नाचते इस तौर ज्यों रंडी नचे सुर ताल में।
पार भवसागर के कैसे होंगे सब कलिकाल में॥

केलि करैं चेलियों के संग में तज के घर की लुगाई ।
जाल में इनके कोई न फंसना ये कलियुग के हैं भाई ॥२॥
तन मन धन कबजे कर लेते मंत्र समर्पण का दे कर ।
जो धन चेलों से ले जाते करैं पतुरियों की ये नजर ॥
दास ये रंडी भडुवों के हैं नहीं इन्हें ईश्वर की खबर ।
आंख के अन्धे गांठ के पूरे आंख खोल देखो पितधर ॥
शेर—हैं सकल परिवार इनका नाचते हैं सब खड़े ।
लाज इनको है नहीं बेशर्म ये हैं गे बड़े ॥
रंडियों की तरह से ये ढ्रग छड़ाते हैं अड़े ।
हो गये मतिमन्द चेले जाल में इनके पड़े ॥
पत्थर उनकी पड़े बुद्धि पर जो हैं इनके अनुगाई ।
जालमें इनके कोई न फंसना ये कलियुग के हैं भाई ॥३॥
ये मेरे हैं गुरू गुसांई मैं इनका चेलाहूं कमाल ।
सुनो लगा कर ध्यान वैश्नवों ! सब इनका कहताहूं हाल ॥
जो कुरीत पीढ़ी दरपीढ़ी चली आती इनके हरसाल ।
बीच सभा के जो बैठे हो हाल सुनो सब लाल गोपाल ॥
शेर—ये जो इनके आचरण हैं सब तुम्हें समझाय के ।
इन के फंदे से छुड़ा दूंगा तुम्हें हरपाय के ॥
ये तुम्हें ठगते हैं कंठी बांध तिलक लगाय के ।
जिस तरह फांसी लगाते हैं बधिक भरमाय के ॥
कहैं बिलाकट चेलो यारो देत मनसुखा समुझाई ।
जालमें इनके कोई न फंसना ये हैं कलियुग के भाई ॥४॥

श्रोतागण ! यहां लों तो परम संक्षेप से मैं ने इन्की चोटीली २ बात एक इशारेसे खोलदीहै क्योंकि मैंने पूरी तौर से इन्की भद्द करना पबलिक के सामने अनुचित समझा पर तौभी इस्की सीक्रेसी औ मिस्ट्री जो प्रत्येक विषयोंमें पाई जातीहै कहना आरंभ करता तो एक जुदी हिस्ट्री बन जाती, पर क्या करूं जब मैंने देखा कि अब तक भी ये गोस्वामी लोग नहीं सुधरतेहैं और और पुस्तकें जो इन्के भलाई व उपदेश निमित्त रची गईहैं उस पर इन ने तनिक भी न ध्यान दिया तो लाचार होकर मुझे यह जगड्वाल करना पड़ा । मैं अब स्वयं अधिक समय न लेऊंगा क्योंकि इस प्लेटफार्म पर खड़े होने से मुझे एक लांग् स्पीच देना स्वीकार नहींहै इससे मैं अब आप सभ्यों से गुडबाई कर खसकता हूं । आशा है कि अब आडिएन्स में से कोई जेन्टिलमैन अपनी ओपीनियन इस सबजेक्ट पर प्रकाश करैंगे ॥ (आज का जलसा मुझको मुबारक होवे)

और आप सब साहवान इस हालत में पहुंचे हुए मुल्क को गारत होने से दिलोजानसे कोशिश कर बचाइएगा, हाजिरीन जलसा ! आप लोगोंको चन्द खास २ नसीहतें मुख़लिफ तौर पर खुसूसन इस बारे में दी गई हैं और दी जावेंगी यकीन है कि आप सब साहवान कुबूल फरमा कर हकतुल इन काम अमल में लाकर मुझे निहायत मशकूर व ममनून करेंगें ॥ (कह के चला गया और पर्दा आ गया)

(पुच्छदास का प्रवेश)

पु०—दर्शकवृन्द ! नाटकके फाटक को तो तोड़डाला बाकी रहा अब अज्ञान का ताला जिस्को खोलनेके लिये भक्ति मार्ग की कुंजी होना अत्यन्त आवश्यक है । बिना ज्ञान के उस कुंजी से भेट कहां, हां जे व्यर्थेही किसी वस्तु को तद्वत् मान मिथ्या कुंजी की कल्पना कर रहे हैं उनकी वृथा जल्पना को देख कौन से अज्ञानतिमिरान्ध नाशी को ग्लानि न

होगी । इससे हे देश की सुदशा प्रवर्त्तको ! चेतो ! इस प्राचीन दीनदशा में प्राप्त इस देशकी सहायता व उन्नति के उपाय की चेष्टा करने में दत्तचित्त हो, अनुभव की शरण लो, हठको दूर छोड़ो प्रत्येक बात की प्रत्यक्षता व परोक्षता की जांच रक्खो, जो आज तुम्हें ज्ञानाभाव से प्रिय जान पड़ता है थोड़े दिनों के पश्चात् विचार से कलुषित दीख पड़े तो उसे त्याग दो ॥ देखो मैं ही प्रथम इस सम्प्रदाय का शिष्य रहा बिना विचारे ही जब कि माका दुग्ध भी नहीं छोड़ा था तभी उसी दिन मेरे गले में गोस्वामीजी ने कण्ठी फांस दी थी बस गरदन तो मैं यहां उसी दिन दे चुका था जब कि ज्ञान का लेश भी नहीं था पर हां अब इनका सत्संग उठाते २ अब कुछ ख्याल साफ हो गया है और इनकी गुरुता भी समझने में आ गई है इस से एक दम ग्लानि चित्त से प्रगट हो पड़तीहै और अपने व्यतीत जीवन की मूढ़ता के संशय में महा कष्ट होता है, मैं ने जब भली भांति इनकी पोल टटोली तब इतना जी खोल कर कहने का साहस हुआ है। क्योंकि मैं ने जी में कहा कि यदि पुच्छदास तुम ऐसही सदा पुच्छदास बने महाराजों के पूछसे लगेर घूमा करोगे तो सचमुच कानपूछ दबाये

दिनान्ध सरीखे जीवन विताना होगा और अपने दूसरे भाइयों की क्या भलाई करसकोगे, निस्संदेह तब न तुम्हारी भलाई होगी न अन्य बांधवों की, मैंने इनके गोसाइयोंकी सब रंगत देखी ऊंचानीचा सब ही सोच लिया और मैं ने सहस्रों प्रश्न भी किये हैं कि जिसका उत्तर जो कोई विद्वान शायद दे सकैं यदि आप सब लोगों की अभिलाषा हो तो कहिये हम इनके रहस्य को प्रकाशैं और प्रश्न को दरेर से ढेर कर दें ॥

(महा कोलाहल से सब श्रोतागण कहने लगे—कहो ३)

सवैया ।

गोल मठोल और चौकने चोपरे, गाल बनाये रहैं ये उठाना । जो कोइ लाय के भेट धरै, वाय ले देत प्रसाद को दोना ॥ तेल फुलेल सी मांग सवांरत, भौंह बनाय लगावैं दिठौना । यह सपने नहिं होत हैं अपने । गोसांई के बालक औ ब्याल के छौना ॥

ख्याल रंगत खड़ी ।

पोल खोल देताहूं इनकी सभासदों ! धर ध्यान सुनो । सकल बैष्णव, वल्लभ मत के जरा खोलकर कान सुनो ॥

है जगदीश्वर निराकार मैं प्रथम तुम्हीको करूं प्रणाम ।
सकलसृष्टिके करताधरता अहो तुम्ही सब सुखकेधाम ॥
सब चलते अपने मति पर ईसाई मूसाई और इसलाम ।
अनेक मतिपर चले ये हिन्दू बनते फिरते सुनो निकाम ॥
शैर—हिन्दुओं की बुद्धि निरमल करो श्री करतार जी ।
वेद मति पर सब चलैं बेड़ा हो जिसमें पार जी ॥
है यही विनती मेरी भगवान प्राण अधार जी ।
कीजिये कृपा व दृष्टी शुद्ध हों नर नारि जी ॥
प्रकाश सब के हृदय में कीजे हे प्रकाश भगवान सुनो ।
सकल वैष्णव, वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ १ ॥

लोभी गुरू लालची चेला मिला आन ऐसा संयोग ।
वो धन हरते गुरू हैं, दम्भी भोले चेले हुआ येरोग ॥
नाच रहे श्री बाल कृष्ण बन राधा करने को उद्योग ।
सकल वैष्णव है बन वैठे वुत्त बने सब देखैं लोग ॥
शैर—हैं गुरू इस ढब के ये बन मर्द से औरत मगर ।
नाच सब के तईं दिखा के पालते अपना उदर ॥
ग्रंथ जितने मतके इनके अब सुनो उनका जिकर ।
है कपट की खान बिलकुल देखलो करके नजर ॥
धूल झोंक करके आंखों में हर लेते धन धाम सुनो ।
सकल वैष्णव, वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ २ ॥

आंख के अंधे गांठ के पूरे जो इनके ढिग आते हैं ।
अक्ल के देखो अधूरे बिना पढ़े फंस जाते हैं ॥

आदि अन्त तक इनका सुन लो अब हम हाल सुनातेहैं ।
गुप्त प्रगट सब दिन की लीला देखौ हम बतलाते हैं ॥
शैर—माल ठगते हैं ये सब का मकर से औ चाल से ।
सूड़ ते एंड़ी से चोटी तक सुनो हर हाल से ॥
दीन दुनियां से गया जो फंसा जान औ मालसे ।
काल से बच जाय पर बचता न इनके जाल से ॥
ऐसे चेले सम कपोत के फंसे हुये अज्ञान सुनो ।
सकल वैष्णव ! वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ ३ ॥
देखो इनके ग्रन्थ सकल विद्वानों मिल कर करो विचार ।
भरे गपोड़े हैं जिनमें कथा है अद्भुत बे शुम्मार ॥
भारत गारत करने को हैं रचे ग्रन्थ सब झूंठ लबार ।
त्राहि २ सब, करैं विदेशी कथा है ये झूंठा विस्तार ॥
शैर—देख इनके आचरण सब लोग मलते हैं दो कर ।
ग्रन्थ मूढ़न के ठगन को हैं बनाये सर बसर ॥
भोग से अपने वो पहिले व्याहता अपनी सुकर ।
जाय के सौंपे गुसांई जी को हो कर के निडर ॥
बेटा बेटी बहिन भानजी अर्पण कर दे दान सुनो ।
सकल वैष्णव ! वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ ४ ॥
भारत की जीरण नैयाको किया डुबानेका है विचार ।
स्वच्छ देश को, किया व्यभिचार का है ये देखो भंडार ॥
चेलों को नसीहत के लिये किये हैं अनेक गुटके तयार ।
अन्य मारगी से करना लिखा नहीं देखो गुफ़तार ॥

शेर—पास वो श्री नाथ के छकड़े में बैठी थी कमाल ।
नाम गङ्गाबाई था वो नाज़नी थी नौ निहाल ॥
नाथ जी वो गङ्गा बाई से कहा करते थे हाल ।
बोलते शिवजीसे क्योंनहिं शिवदिखातेथे मशाल ॥
ये सब ठग विद्या है इनकी कहीं ले हमने छान सुनो ।
सकल बैष्णव ! वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ ५ ॥

लिखा है इनके ग्रंथ में देखो विचार लो पंडित ज्ञानी ।
महा बन की थी देख लो अति सुन्दर एक खतरानी ॥
गर्भ गुसांई जी से रह गया स्वप्न में देखो लासानी ।
जिस तरह से, गर्भ मरियम के रह गया हक्कानी ॥
शेर—हैं ये कुदरत से खिलाफ कि गर्भ सुपने में रहे ।
जाल के हैं ग्रंथ इनके जो ये पुरुखों ने कहे ॥
जाल के सागर में इनके फंस के सब चेले बहे ।
आप भी डूबे गुरू चेले डुबाये कर गहे ॥
बड़े शर्म की बात बनाये व्यभिचारी भगवान सुनो ।
सकल वैष्णव ! वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ ६ ॥

हा ! दुर्गति और हाय ! अविद्याने लोगोंको भरमाया ।
जिधर को चाहा, बजरबट्टू की तरह से लुढ़काया ॥
कृष्ण गुसांई जी को मानते अंधियारा ऐसा छाया ।
इन घोंघों ने, कृष्ण इन ठगियन को क्यों बनाया ॥
शेर—कृष्ण के गुण कौन हैं इनमें कहो हमसे असल ।
क्यों बने मोंगे फिरो हरबात में इनकी है छल ॥

कृष्ण ने उंगिली पै गोवरधन उठाया करके बल ।
और जंगल में करी शुन पान सब दावा अनल ॥
क्या कोई इन गोसांइयों में है ऐसा बलवान सुनो ।
सकल वैष्णव ! वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ ७ ॥

जिन हाथों से श्री कृष्ण ने जीते असुर महा दुरजन ।
उन हाथों से, गोसांईं जी करते हैं कुच मर्दन ॥
जिन उंगलिन पर श्री कृष्ण ने उठा लिया था गोवरधन ।
उन उंगलिन को गुसांईं जी नचा रहे देखो वन ठन ॥
शैर—जिन करों में कृष्ण ने ले चक्र वो रच के समर ।
जेर दुष्टों को कियां काटी भुजा औ जांघ सर ॥
उन करों में ये गुसांईं लेखनी निज थांभ कर ।
ग्रंथ ठगने को लिखे हैं देखलो सब नारि नर ॥
जाल का जामा पहन के बैठे बन के गुरू महान सुनो ।
सकल वैष्णव ! वैष्णवो ! जरालगा के कान सुनो ॥ ८ ॥

यातो छोड़ो कृष्ण का बनना करामात या दिखलाओ ।
जो बनते हो कृष्ण तो कृष्ण के लक्षण दरसाओ ॥
या पर पत्नी भ्रष्ट करन को बने कृष्ण तुम बतलाओ ।
यही लिखा क्या ! कहो गीतामें खोलके हमको समझाओ ॥
शैर—कृष्ण ने बिन नाव गोपी पार यमुना के करी ।
भेज दुर्वासा के ढिग दी और सब बाधा हरी ॥
तुम गुसांईं जी सुनो यमुना में जा देखो जरी ।
डूब जावोगे बिना बस नाव बिन कारीगरी ॥

याते। दिखावो कृष्णशक्ति नहिं तजो मानअभिमान सुनो।
सकल वैष्णव ! वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥ ९ ॥

मैं चेला हौं सेवक निर्मल श्री चरणोंका रहता ख्याल।
तुम मेरे हो गुरूगुसांई बहुतों के हो गोरू घंटाल ॥
थूके मेरे तिलक छाप पर नर नारी और बाल गोपाल।
सब कहते हैं गुरू व्यभिचारी इनकी है ये चाल कुचाल ॥
शेर—ये वचन लोगों के सुन दिलपर हुआ मेरे जखम।
देखने मैं भी लगा आखों से गुरुओं के काम ॥
सब कपट व्यवहार इनका कुल नजर आया मरम।
जान सब मैं भी गया औ खुल गया सारा भरम ॥
फिर मैं ने समझाया इनको दिया बहुत सा ज्ञान सुनो।
सकल वैष्णव ! बैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥१०॥

फिर मैं इनके देखके लच्छन मनमें करनेलगा विचार।
अन्धकारसे निकलना चहिये हो जिस्से अपना निस्तार ॥
ये जो बनाया ग्रन्थ है मैं ने करनेको सब का उपकार।
झूंठ लेखनी से, जो लिखते डूब जांयगे वो मंझधार ॥
शेर—जो कहो विश्वास से जाते हैं सब कारज सुधर।
तो बना बालूको लो विश्वाससे अब तुम शकर ॥
और फिर विश्वास से घोड़ा बना लो लाके खर।
नर को मादा और मादाको बना लो लाके नर ॥
दूध न ठहरे चलनी में दुह दुह के हो हैरान सुनो।
सकल बैष्णव ! बैष्णवो ! ज़रा लगाके कान सुनो ॥११॥

सत्यरूप ईश्वरका है तुम सत मतिको करलो धारन ।
भवसागर से तरा जो चाहो मान लीजिये सत्य वचन ॥
सत्यसे बढ़कर कोई धर्म नहि ऋषीमुनी कहते सज्जन ।
सत्य से उत्तम, तपस्या कोई नहीं ना कोई रतन ॥
शैर—सत्य से बढ़कर न कोई ज्ञान वस पाया सुनो ॥
सत्य की महिमा अगम वेदों ने फरमाया सुनो ।
सत्य सब तीरथ का तीरथ है ये बतलाया सुनो ।
कहैं बिलाकट सत्य से गोलोक नजराया सुनो ॥
असत्य को छोड़ो असत्य ये अधम नर्क की खान सुनो ।
सकल वैष्णव ! वैष्णवो ! जरा लगा के कान सुनो ॥१२॥

श्लोक ।

नहिसत्यात्परोधर्मो नहिसत्यात्परंतपः ।
नहिसत्यात्परंज्ञानं तस्मात्सत्यंसदाचरेत्॥

कवित्त ।

लीन्हो अवतार जग जीवन के हेतु आप देश गुजरात को पवित्र कर दीन्हो है । लीला कर शिष्यन के मन को कलेश हर्यो आप के समान और दूसरो न चीन्हो है ॥ रूप में मनोहर और वैभव में मस्त महा विद्या गान तानहू में चित्त रहै भीनो है । आप सब लायक मैं कछू पै न ला

यक चित्त को चलाय कछु प्रश्न नेक कीन्हो है ॥ १ ॥ महा व्यभिचारी छोड़ैं काहू की न नारी याही हितु देह धारी परलोकहू नसायो है । नारी व्यभिचारी रहे सेवा के मंझारी औ नाथ को पियारी यश जग मांहि छायो है ॥ ऐसे पाखंडो तजि गेह भये दंडी पीछे राखि लीन्हो रंडी तासों बंशहू चलायो है । ताहू पै बतावैं आप अपने को अधिक ये लाजहू न आवै व्यर्थ जग भरमायो है ॥ २ ॥ गोपीनाथ जी के जग जीवन सुपुत्र रहे अपनी कुमति त्यागि सन्यासी भये नीके हैं ॥ योगी योगीन्द्र की सुदीक्षा लई नीकी भांति ग्रंथ को बनायो तुम्हें लागत सुफीके हैं ॥ पोल सब खोल बातें कही अनमोल देश देशन में डोल बोलि बचन अमी के हैं । तुम्हें न सोहाने मन नेकहू न माने सदा नाच गान साने रूप धर युवती के हैं ॥ ३ ॥ इन सब बातन सो नेकहू न काम हमैं प्रश्न एक कहो यामें वेदको प्रमानहै? । ताही में बातें कछु आप सो जताइबे को लिखीहैं बताइये जो आप बुद्धिमान हैं ? ॥ काहू को जनेऊ वेद बिधि ते न देत देखो विधवा तिहारी ही धर देत कांधे आन है । कंठी बांधि गले में बनाये चे-

ला चेली सबै स्वर्ग से बोलायो कहो कौन को विमान है ? ॥

ख्याल रंगत महराज ब्रह्म संबंध का ।

एक और मेरा प्रश्न है सुनो गोस्वामी, महाराज जरा इस पर चित लाओ जी । ब्रह्म से क्या सम्बन्ध तुम्हारा हमें बताओ जी ॥ टेक ॥

है ब्रह्म नाम ईश्वर का सुनिये स्वामी, महाराज है वो तो अजर अमर करतार । नहीं लेता वो जन्म अजन्मा कहैं उसे संसार ॥ बिन पग चलता और बिन कण्ठ के बोले, महाराज हाथ बिन करता सारे कार । बिन शरीर घट २ में व्यापक नहिं उसका आकार ॥

शेर—नैन बिन देखै है सब को और सुनता बिन श्रवन ।
मुख बिना भोगे है सब रस जीभ बिन बोले बचन ॥
नासिका बिन स्वांस लेता और यम हैं गो दमन ।
लाल पीला श्वेत काला है न कोई जिसका बरन ॥

झेले—बिन शस्त्र जीत राजों को छिन में लेना ।
असुरों को दले और भक्तों को सुख देता ॥
महाराज, भेद नहिं उसका पावो जी ।
ब्रह्म से क्या सम्बन्ध तुम्हरा हमें बतावो जी ॥ १ ॥

सच कहो ब्रह्म से रिस्ता कौन तुम्हारा, महाराज लाओ नाता क्या है जी । या तुम उसके पुत्र कहो या

रहे

हो तुम भ्राता जी ॥ या यथा ब्रह्म के हो तुम या हो लाऊ, महाराज तुम्हारा पिता या माता जी। कहो ब्रह्म है कौन तुम्हारा यग लिखवाता जी ॥

शेर—या पयंबर बन के आये रोज देते हो खबर।
या फिरिस्ते बन के उड़ते रोज तुम वे नाज पर ॥
सच कहो आकाश में या ब्रह्म का पृथिवी में घर।
या कहो पूरब है पच्छिम या कहो दक्षिण उत्तर ॥

झेले—हो मिले ब्रह्म से या रहते हो न्यारे।
रहता है या मन्दिर में ब्रह्म तुमारे ॥
महाराज, कृपा कर के फरमाओ जी।
ब्रह्म से क्या सम्बन्ध तुम्हारा हमें बताओ जी ॥ २ ॥

जब पूर्ण ब्रह्म सम्बन्ध को लेता सुन मन, महराज स-मर्पन करता नारी जी। फिर नारी लेती हैं कहो क्या करें अनारीजी, तन स्त्रिया पुरुष ने सारा अपना अर्पण, महाराज अर्ज सुनिये हितकारी जी ॥ कौन चीज आती है पुरुष के काम में सारी जी ॥

शेर—है भरा मल मूत्र से स्त्री का सारा चाम जी।
कौन सी चीजें वो आवेंगी तुम्हारे काम जी ॥
अंग ऊपर का या नीचे का कहो सुख धाम जी।
अब कृपा करके बताओ खोल कर के नाम जी ॥

झेले—जब स्त्री अपना तन अर्पण कर जावे।
फिर काम में पलिके आवे या नहिं आवे ॥

महाराज, ये भ्रम है नाथ मिटाओ जी ।
ब्रह्म से क्या सम्बन्ध तुम्हारा हमें बताओ जी ॥ ३ ॥

नारी का तो ये परम धर्म है स्वामी, महाराज, सदा करना पतिका सतकार । लिखा वेद में स्मृती सुनी कहैं शास्त्र ललकार ॥ पति परमेश्वर सम दोऊ गुरू अघ हरता, महाराज, देव पूजा नहिं कहूं विचार । नारि सर्वदा पति सेवा कर उतरै सागर पार ॥

शैर—दो सकल तीरथ व तीरथ पतिको पत्नी मानिके ।
बचन थे, ये के पिये ये बचन हैं भगवान के ॥
तुम कहो करुणा गुरू चहिये जगत में आन के ।
है गुरू पत्नि का पति आदर है दीन आदानके ॥

झेलि—अनसुइया ने संता जी को सिखलाया ।
पति समान नहिं दूजा देव बताया ॥
महाराज, वेद में हो तो दिखलाओ जी ।
ब्रह्म से क्या सम्बन्ध तुम्हारा हमें बताओ जी ॥ ४ ॥

फिर भगवत को परसाद जो कर दिया अर्पण, महाराज सकल व्यञ्जन सुन भाईजो । बरफी पेड़े मोहनभोग और दूध मलाई जी ॥ जैसे दुकान हेलवाई की होतौ है, महाराज बेचता मोल मिठाई जी । कहां लिखा परसाद बेंच के करो कमाई जी ॥

शैर—सब लुटाना भाटिये दोनोंको सच कहिये कृपाल ।
कौन करवाता अनेक है इन्हें कहिये वो हाल ॥

या बहू बेटी वो विधवा आपकी जाकर गोपाल ।
ले जनेऊ हाथ में देती गले में उनके डाल ॥
झेले—कर करके ब्रह्म सम्बन्ध वो शिष्य तुम्हारे ।
कहो कौन कौन से चेले स्वर्ग पधारे ॥
महाराज, सबों का नाम बताओ जी ।
ब्रह्म से क्या सम्बन्ध तुम्हारा हमें बताओ जी ॥ ५ ॥

सौ विप्र से बढ़ के बना नाम धारी है, महाराज; आप की सुना जबानी जी । सौ नामिन से एक समर्पणी कहते ध्यानीजी ॥ सौ समर्पणी से एक कही मर्यादी महाराज, आपने कथा बखानी जी । सौ मर्य्यादी से बढ़ कर एक विरक्त हमने जानी जी ॥

शेर—सौ विरक्तों से वो बढ़ कर लाद्रर्शका पद किया ।
जिनको गमजन किया दृश अर्द्धिशका फल लिया ॥
है लिखा किस शास्त्रमें या तुमने आपी लिख लिया ।
सत्य अमृत छोड़ के क्यों झूंठ विष लेकर पिया ॥
झेले—पितरों के श्राद्ध में ब्राह्मण नाहक जिमाते ।
यों कहैं बिलाकट दुनिया को बहकाते ॥
महाराज, जरा दिल में शरमाओ जी ।
ब्रह्म से क्या सम्बन्ध तुम्हारा हमें बताओ जी ॥ ६ ॥

कबित्त ।

भक्ति उपदेश देत भक्तिको न लेस जानैं भेषको

बनाय ठगिवे की बात लाई है । और२ लोगन कों भरम भुलाय रहे धर्म धन खींचवे की बुद्धि उपजाई है ॥ नारी सुकुमारी गोरी भोरी निज शिष्यन की तिनको समर्पण में मुक्ति दिखलाई है । ऐसे २ यश जग जाहिर भये तातें थूकत हैं तुम्हें सब लोग औ लुगाई है ॥ १ ॥

नारी नर सकल पवित्र जब होइ लेत ब्रह्म सम्बन्ध ताहि होत सुख सई है । करें अङ्गीकार जब सेवा में गुसांई स्वरूप तबही पवित्र होत ग्रंथ लिख लई है ॥ कृष्ण रूप होयगो जो जीव जग मांहि सबे कंठी औ गुसांई जौन जाय२ दई है । जौन२ नारिन को उर लपटाय लीन्हीं उत्तम गति तिनते न काहू की भई है ॥ २ ॥

ब्रह्म सम्बन्ध को महातम महा ही लिख्यो सुनत सुबुद्धिन की बुद्धई हिरान है । स्त्री धन पुत्रन समर्पै जग पुरुष जो हैं स्त्री को समर्पै या को भाखिये विधान है ॥ पति को समर्पवे में काई नहीं जौन चीज स्त्री सों समर्पै होय आनन्द महान है । ऐसी२ बातें लिखी ग्रंथन बनाय वाहे याहू में वेदन को नेक हू प्रमान है ॥ ३ ॥

टीका॥ नवरत्न में बनाय लिखि लीन्हों यहै चेला

जो विवाह करै नारी सुखमान है ॥ पहिले गुरू ही को अर्पण करावै आप पाछे भाेग आप भोगी यही सुखदान है ॥ दूसरो सिद्धांत को रहिस्य ताके टीका मांहि युवती सुतादिक समर्पनो वखान है ॥ पूछैं हम ताको प्रभु उत्तर बताय दीजै इनहूं सब बातन में वेद को प्रमान है ॥

ब्राह्मण जिमाये सों जितेक पुण्य होत तासों सौगुन जिमाये नाम धारी को बतायो है। नाम धारी सौनको समानहो समर्पनी है ताहू ते मर्यादी सौगुनों अधिकायो है ॥ एकही विरक्त मर्यादी सत्त को समान ताहशी विरक्त हू ते सौ गुन गिनायो है। ताते श्राद्ध आदिक पुनीत कर्म कारन में इनको जिमाये पुन्य अधिक लखायो है ॥ ४ ॥

आप निज घर में सुश्राद्ध काल भोजन में इनको जिमाय फल लीजिये महान है। केशर को यमुना ये भक्तही को रूप महा राजकोट वाको ये भोचिह्न सुजान है ॥ चौसी बाल विधवा ये सबै मर्याद वाले इनहीं को भोजन सों महा कल्यान है। पूछैं हम ताको आप उत्तर बताय दीजे इनहूं सब बात में वेद को प्रमान है ॥ ६ ॥

ख्याल रंगत लंगड़ी ।

श्रीनाथ जहां अब श्राजत हैं सुखदाई । मसूजिद या मन्दर कहो गुरू समझाई ॥ टेक ॥ निज मन्दर मन कोठा स्वामी फ़रमावो । जगमोहन से न्यारा है क्यों बतलाओ ॥ हैं सात ध्वजा ये शिखर पै क्यों समझावो । कर अलग अलग सब उन की कथा सुनाओ ॥

शैर—छत ये जगमोहन की पक्की है बनी किस साल जी ।
शिखर पर खपरे रखे क्यों सच कहो सब हाल जी ॥
धीलो पंख। पौल हथिया पौल तो गोपाल जी ।
पौल सूरज क्यों बनाई सच कहो कृपाल जी ॥
दरशन की रस्ता पांच हैं गिनी गिनाई । मसूजिद या मन्दिर कहोगुरू समझाई ॥ १ ॥

मन्दर के बाहर बजता जहां नकारा । था निज मन्दर तो वहां सुनो विस्तारा ॥ जिस ठौर खर्च का है उत्तम भयहारा । नक्कारखाई ने छकड़ा वहीं उतारा ॥

शैर—चिन्ह तो मसूजिद के सब आते बराबर हैं नजर ।
फोड़कर कोना बनाया है सुनो मन्दर शिखर ॥
तुम जो कहते बादशः डाढ़ीसे झारे था मगर ।
कौनसा सन् साल सम्वत् कौन शाह किसका पिसर ॥
हो तवारीख में तो दीजै दिखलाई । मसूजिद या मन्दर । कहो गुरू समझाई ॥ २ ॥

सतयुग में राजा अम्बरीक्ष थे ज्ञानी । थे महा प्रतापी और बड़े थे दानी ॥ तुम उनके ठाकुर कहते कथा बखा-नी । इतने दिन तक कहं रहे डुबो सैलानी ॥

शैर—ताड़ से लम्बे जो हो मधुरेश ने दरशन दिया ।
कौन कारन से कहो उन रूप फिर छोटा किया ॥
बोलते पुरुषों से ठाकुर थे ये हमने सुन लिया ।
अब नहीं बोले हैं तुम से क्यों किया बज्जर हिया ॥

क्या तुम उनकी संतान नहीं हो जाई । मसजिद या मन्दर कहो गुरू समझाई ॥ ३ ॥

दोसे बावन बैश्नव जो थे चौरासी । उनसे ठाकुरजी सैन लड़ाते खासी ॥ अब रूठ गये क्या सब से हुये उदासी । क्यों नहीं मांगते हैं वो भोग बिलासी ॥

शैर—क्या हुआ झूठा समर्पन मंत्र अब स्वामी कहो ।
घटगई चेलों की भक्ती तुम गुरू नामी कहो ॥
या बिगड़ कुछ तुम गये गोकुल के बिसरामी कहो ।
या गये गो लोक ठाकुर अन्तरजामी कहो ॥

ये बात बनावट की है सब नजराई । मसजिद या म-न्दर कहो गुरू समझाई ॥ ४ ॥

रामानुज तो लक्ष्मी के तईं बतलाते । माधवाचार्य्यजी तो ब्रह्मा जी को गाते ॥ निम्बारक वो सनकादिक के तईं मनाते । बिश्नू स्वामी आचार्य्य रुद्र ठहराते ॥

शेर—भावना में यों गुरू जी ने कहा हैगा वो हाल।
रुद्र को वो धूर्त पाखण्डी की दी हैगी मिसाल॥
तुम बताते नाथ के आगे दिखाते शिव मलाल।
भूल पुर्पों के कहे पर डालदी तुमने कमाल॥
यों कहें चिलाकट झूठी कथा बनाई। मस्जिद या मन्दर कहा गुरू समझाई॥ ५॥

कवित्त।

दिल्ली पति यवन नरेश को जु पुत्रौ हतो ताको नाम सो तो जाहिर जहान है। ताही को प्रेम सो पधारे श्री नाथ जू हैं बादशाह गेहमें ये ग्रंथन बखान है॥ ह्वै के अप्रसन्न लात मारी बादशाह जू के ऐसो बात आप ही को ग्रंथ में लिखान है। ऐसी २ गप्पें लिख राखी निज ग्रंथन में इनहू सब बातनमें वेदको प्रमानहै॥ १॥

कीन्हों युद्ध बादशाह साथ जल घड़ियन ने राखो मूल मन्दिर श्री नाथ को सुहायो है। फौजे मार डारी सो बिडारी बादशाह जू को ऐसो जल घड़ियन में वीर रस छायो है॥ कृपा श्रीनाथ जी की भई निज दासन पै सो तो सब बात निज ग्रंथन में लिखायो है। ऐसी २ गप्पें

लिख वेद को प्रमान कहैं वेदहू को काहे कों नाहक लजायो है ॥ २ ॥

यवन नरेश औ राणाजी से युद्ध भयो तबही श्री नाथ जी ने हुकुम चलायो है। आयसु को मान छाये दसहू दिसान शाह दल भहरान भों। रा ऐसो बढ़ आयो है ॥ गिरधर लाल जीतो भा। लहो की भांति भये कोद लान्न वागही सों परत सुनायो है। आयसु न दीन्हों श्रीनाथ यह कहा कीन्हों औरनको हार इन्हें काहे ना वचायो है ३॥

धर्म बढ़ाइवे को पाप के घटाइवे को हरी अवतार लेत ग्रंथन वखान है। भयो अवतार श्री नाथ जी को कौन हेत कौन पिता माता कौन कारन महान है ॥ अवतार सुन्द भाषै अठारह पुरानन में तिनमें श्री नाथ जी को कौन सो सुजान है। विष्णुभक्त वल्लभी जे बातैं सन मानत हैं इनहूं सब वातन में कहां को प्रमान है ॥ ७॥

ख्याल रंगत खड़ी।

श्रीनाथ को कहो विष्णु पर चिन्ह विष्णु के नहिं भाई।
ये काले भैरव की मूरत है जिस की काली माई ॥टेक॥
विष्णु के हैं गे चार भुजा और शंख चक्र कर गदा पदम।
सवार रहते गरुड़ पर झूंठ नहीं कहते हैं हम ॥

संग लक्ष्मी शक्ती जिन के सदा रहै देखो साहम।
सर्व व्यापी विष्णु जगत में वेद शास्त्र भरते हैं दम ॥
शैर—सर्प की मालान विष्णू के हैं ग्रीवा में पड़ी।
कौस्तुभ मणि है गले में है चमक जिस की बड़ी ॥
दृष्ट घट घट में पड़े जल थल में जा टूटी लड़ीं।
फूल फूल में पात में जड़ियां हैं कुदरत से जड़ी ॥
सकल विश्व का पालन करता सब में देता दिखलाई।
ये काले भैरव की मूरत है जिस की काली माई ॥ १ ॥
और बताओ श्री मस्तक पर बैठा है क्यों कीर सुजान।
बांया हांथ क्यों करा है ऊंचा इसका अब तुम करो बयान ॥
जो बांयेहांथके निकट पीठकानें दोमूरति है सुनो महान।
किस की मूरति है वो बताओ तज के स्वामी मान गुमान ॥
शैर—और कहिये मूर्ती किस की है वो दहिने अङ्ग है।
अङ्ग दहिने पर कहो कुत्ता या मेढ़ा संग है ॥
पहिले उस कुत्ते के बैठा नाग सर्प भुजंग है।
सर्प के नीचे कबूतर अजब जिस का रंग है ॥
बैल अंग बांये किस की विकराल मूरती बैठाई।
ये काले भैरों की मूरति है जिस की कालीमाई ॥ २ ॥
है मूरति पर सर्प श्रीनाथ के गले में जो है व्याल।
सर्प हैं या और कुछ कहिये जी स्वामी सब हाल ॥
चार भुजा विष्णु के थे ये पुराण कहते कथा कमाल।
दो कैसे हैं श्री नाथ के भुजा कहो कर दूर मलाल ॥

शेर—वस्त्र आभूषण धरन को नाथ जी के तन के बीच ।
क्यों नहीं रक्खी जगह सोच है ये मन के बीच ॥
जो परे के संग गये सूरत शहर के वन के बीच ।
क्या वोही श्रीनाथ ये हैं सच कहो पंचन के बीच ॥
भेंट उघालाये थे वहां से खबर ये हमने पाई ।
ये काले भैरों की सूरति है जिस की काली माई ॥ ३ ॥
अब क्यों नहि कासिद का काम लेतेहो नाथ सेती मिल कर ।
नाहक बढ़ाया खर्च आपने क्यों रक्खे नौकर चाकर ॥
त्यागन कर पीठिका मिले थे महा प्रभू जी से सुंदर ।
दामोदरदास से क्यों नहीं मिले पास खड़ा था दास मगर ॥
शेर—कृष्ण दास ने वेश्या को लाके अधिकारी किया ।
क्या वोही श्रीनाथहैं सेवा में उसको रख लिया ॥
पुर्ष व्यभिचारी कोई मन्दिर में रह धोखा दिया ।
वेश्या को छिपा रक्खा अधर अमृत को पिया ॥
विष्णु किसी को दुख नहि देते दयाल प्रभु जी सुखदाई ।
ये काले भैरों की सूरति है जिस की कालीमाई ॥ ४ ॥
तुम कहते विष्णु की सूरति हमैं वटुक की पड़े नजर ।
चिन्ह विष्णु के कोई न मिलते आंख खोल देखो चितधर ॥
तुम कहते ब्रह्माण्ड विष्णु के अंग में है सब चरा अचर ।
ऐसी रचना और संप्रदावालों ने क्यों की न मुकर ॥
शेर—झूंठ खाना औ खिलाना वाममारग सार है ।
भैरवी चक्कर के मध्ये बस यही व्यवहार है ॥

बस बदन श्रीनाथ का चिड़िया वो खाना यार है।
कथा विलाकट यों कहैं सच्ची मेरी गुफ़ार है॥
कुत्ता है ये पास गले में सर्प माल है लटकाई।
ये काले भैरों की मूरति है जिस की कालीमाई॥ ५॥

ख्याल रंगत जी की।

प्रश्न एक मेरा है सुनिये बल्लभ कुल आचारी जी।
कृपा दृष्ट कर बताओ तुम से अरज हमारी जी॥ टेक॥
कौन देश है वामदेव का कौन नगर में करते वास।
नाम बताओ ग्राम का नाम बताओ इनका खास॥
रूपवती स्त्री इनकी ब्याही थी या इन की थी दास।
सत्य बताओ बताओ सत्य हाल ये है अरदास॥
शेर—किस बरण की थी बताओ कौन इसका ग्राम था।
जन्मथा किस भूमि का और कौनसा वो धामथा॥
थी पली किस जगह में औ किस नगर विश्राम था।
मात इसकी कौन थी और क्या पिता का नाम था॥
घर बैठा ली थी विधवा या आय गई थी क्वारी जी।
कृपा दृष्टि कर बताओ तुम से अर्ज हमारी जी॥ १॥
वामदेव के पुत्र विष्णुस्वामी जी हुये अति उत्तम जान।
पण्डित ज्ञानी हुये ज्ञानी पण्डित देखो विद्वान॥
देशाटन करते करते फिर बसे बीच वृन्दावन आन।
सब नर नारी लगे आदर करने उन का सन्मान॥

शैर—ब्रह्मचारी ये रहे हम को जरा बतलाइये ।
या गृहस्थी बन गये सब हाल खोल सुनाइये ॥
व्याह किस के संग किया समझाइये समझाइये ।
क्या वो बिन व्याहे रहे फरमाइये फरमाइये ॥
जीत काम को लिया कहो क्या बन बैठे व्यभिचारी जी ।
कृपा दृष्टि कर बताओ तुम से अरज हमारी जी ॥ २ ॥

हरीराय थे शिष्य विष्णुस्वामी के या निज थे वो कुमार ।
ज्ञानदेव जी कौन थे ज्ञानदेव जी करो विचार ॥
बिल्वमंगल कहो कौन थे चेले थे क्या सुत प्राणअधार ।
निज मुखसेती खोल कर सम्पूर्ण कहिये विस्तार ॥
शैर—हाल सब इनका कहो ये कौन थे क्या था वरन ।
क्रोध कर के दूर स्वामी सत्य अब कहिये वचन ॥
सब क्षमा अपराध कीजै मैं सरनहूं मैं सरन ।
और जो पूछूं बताओ खोल के सुनलो श्रवन ॥
इन से पीछे कौन हुआ गद्दी पर यह तपधारी जी ।
कृपा दृष्टि कर बताओ तुम से अरज हमारी जी ॥ ३ ॥

छः सै पैंतिस वर्ष से यह मत चला सुना करते हैं हम ।
नौ सै पैंतिस वर्ष में वो भी फिर देखो हो गया खतम ॥
पन्द्रह सै पैंतिस तक खाली रही क्या गद्दी बिना खसम ।
बिल्वमंगल भी भूल हुये ये कैसा खोटा किया करम ॥
शैर—भूल बन के फिर उन्हें कैसे सुरत मठ की रही ।
है पड़ी गद्दी वो खाली आन बल्लभ से कही ॥

भूत विद्या सिद्ध थी वल्लभ को क्या बोलो सही।
ग्रन्थ दिखलाओ जो हो या हो कोई हाजिर यही॥
बिना कंठ जिह्वा के भूत कैसे वाणी उच्चारी जी।
कृपा दृष्टि कर बताओ तुम से अरज हमारी जी॥ ४॥

पंच तत्व में तत्व मिले तब ये शरीर छुट जाता है।
फिर आता है गर्भ में देखो जब सब इन्द्री पाता है॥
तुम कहते हो भूत बोलता औ सब हाल बताता है।
ये है गपोड़ा तुम्हारा सत्य शास्त्र फरमाता है॥

शेर—मंत्र तन मन धन समर्पन ये कहां पाया कही।
भूत से सीखा है या गोलोक से आया कही॥
जोड़ मन कल्पित ये तुमने क्या अजी गाया कही।
कहैंबिलाकटतुमकोस्वामी किसनेसिखलायाकही।
थे संन्यासी या संयोगी वामदेव औतारी जी।
कृपा दृष्टि कर बताओ तुम से अरज हमारी जी॥ ५॥

ख्याल रंगत खड़ी।

सुनिये वल्लभ कुल आचारी तुम कहलाते गुरू महान।
प्रश्न दूसरा हमारा बताइये तज के अभिमान॥ टेक॥
जो तुम कहते नारायन भट हुये वेद के हैं अवतार।
वेद भी कोई जीव है सम्पूरण कहिये बिस्तार॥
वेद तो हैगा अनादि इसको ऋषी मुनी सब कहैं पुकार।
नरतन धारा किस तरह उत्तर दीजै सोच बिचार॥

शेर—सोमयज्ञ बत्तिस किये इन किस जगह बतलाइये ।
गांव कांकरवार में या और कहीं फरमाइये ॥
धन कहो कितना लगा जो हो वोही दिखलाइये ।
या किसी तीरथ के ऊपर हाल सब समझाइये ॥
या थे राजा जिमीदार या साहूकार थे या धनवान ।
प्रश्न दूसरा हमारा बताइये तजि के अभिमान ॥ १ ॥
गङ्गाधर भट को बतलाते महादेव थे गङ्गाधर ।
महादेव तो कहें ईश्वर जो हैं देखो अजर अमर ॥
कभी नहीं लेता है जन्म सब कहैं अजन्मा नारी नर ।
कौन शास्त्र से करते हो तुम जन्म शंकर का मुकर ॥
शेर—यज्ञ अट्ठाइस किये उन कौन से किस ग्राम में ।
कौनसी नगरी बताओ और किस शुभ धाम में ॥
कौन से पर्वत के ऊपर और किस विश्राम में ।
कौन से वन में किये औ कौन से आराम में ॥
निर्धन थे या महाधनी थे या धन की रखते थे खान ।
प्रश्न दूसरा हमारा बताइये तजि के अभिमान ॥ २ ॥
गणपतिभट को तुम कहते हो गणेश ने आ लिया जनम ।
गणेश तो हैं ईश जक्त के निराकार ना धरैं जिसम ॥
गणपतिभट ने तीस यज्ञ किस जगह किये पूछे हैं हम ।
कौन विधी से किये यज्ञ तुम कहो खोलकर रीति रसम ॥
शेर—भट्ट बल्लभ को कहो तन आन सूरज का धरा ।
जन्म भी लेता है सूरज बस कहीं देखो जरा ॥

पांच कीन्हें यज्ञ वल्लभ धन कहो किस का हरा ।
पुत्र क्यों जाता निकल धन होता जो घरमें भरा ॥
फिर काहे से किया यज्ञ धनहीन करै कहो कैसे दान ।
प्रश्न दूसरा हमारा बताइये तज के अभिमान ॥ ३ ॥
लक्षमनभट को ब्रह्म बताते वेद ब्रह्म को कहैं अनन्त ।
योगी तपसी ऋषी मुनी ध्यान धरै हैं जिस का सन्त ॥
नहिं लेता औतार ब्रह्म औ लिखा वेद में है ये तन्त ।
लक्षमनभट तो ए संन्यासी था उनका वो वास एकन्त ॥
शैर—यज्ञ धन बिन पांच लक्षमनभट्ट ने कैसे किये ।
कौन से सेवक से कहिये खर्च को सिक्के लिये ॥
भूंख के मारे हमेशा घोल उन सत्तू पिये ।
क्या उसी धन से किये जो बेंच दो लड़के दिये ॥
सुत बेंचे दोउ गिरीपुरी को यज्ञ कियो क्या करो बखान ।
प्रश्न हमारा दूसरा बताइये तजि के अभिमान ॥ ४ ॥
तुम कहते इन सबों ने मिल सौ यज्ञ किये हैं हितकारी ।
बिना यज्ञ के रहे हैं कैसे वल्लभ जी यह औतारी ॥
किया न बिट्ठलनाथ न गोपीनाथ किया अचरज भारी ।
क्या जोगी थे निर्धनी कहो कथा हम से सारी ॥
शैर—तुम कहो औतार वल्लभ राधिका प्यारी भई ।
छोड़ के गोलोक क्यों गोपाल से न्यारी भई ॥
नाथ बिट्ठल की बहुत इस बात में ख्वारी भई ।
कृष्ण कहते हो कभी चन्द्रावली नारी भई ॥

गोपीनाथ को बतलाते औतार भये दाऊ बलवान ।
प्रश्न हमारा दूसरा बताइये तजि के अभिमान ॥ ५ ॥

गोपीनाथ के सुत पुरुषोत्तम क्यों नहिं बैठे गद्दी पर ।
क्या संन्यासी हो गये बसे जाय काशी भीतर ॥
सात पुत्र हुये विट्ठल जी के सबसे बड़े थे वो गिरधर ।
बालकृष्णजी और गोविंदलालजी और हुयेहैंवो रघुवर ॥
शेर—और यदुपतिनाथ गोकुलनाथ थे घनश्याम जी ।
भट्ट पदवी छोड़ क्यों पाया गुसांई नाम जी ॥
गो कहें इन्द्री औ पृथ्वी गो गऊ सर नाम जी ।
तीनमें तुमकिसकेहो स्वामी सचकाहोसुखधाम जी ॥
कहैं विलाकट या चेलिनके हो स्वामी कहो खोल जबान ।
प्रश्न दूसरा हमारा बताइये तजि के अभिमान ॥ ६ ॥

ख्याल ।

महा प्रभू वल्लभचारी का कहो खोलकर जन्म अस्थान ।
प्रश्न तीसरा हमारा सुनिये स्वामी लगा के कान ॥
कौन नगरमें जन्म लियाथा और कौनसा था वो ग्राम ।
माता उनकी कौन थी किसकी बेटी क्या था नाम ॥
कौन जाति थी किसनेपाली और कहां करती विश्राम ।
हाल बताओ बताओ कुछ हाल मैं करूं प्रनाम ॥
शेर—कौन तिथि थी कौन सा नक्षत्र था फरमाइये ।
जन्म लेने के वखत की क्या लगन बतलाइये ॥

हो जन्म पत्री तो ला के अब ज़रा दिखलाइये ।
या नहीं शतपाठी तुम ने हाल सब समझाइये ॥
नदी किनारे बनी जो बैठक वहीं जन्मपत्र लिखाया नाम ।
प्रश्न तीसरा हमारा सुनिये स्वामी लगा के कान ॥ १ ॥

कहो कहां जाते थे लक्ष्मन भट्ट कौन तीरथ के पास ।
किस जंगल में किया था किस जंगल में जाकर वास ॥
हुआ कौन से वन के बीच उनकी स्त्री का गर्भ स्राव ।
सच बताओ हाल ये सब बतलाओ है अरदास ॥
शेर—मास छः का जिसके होवे गर्भ कहीं देखा चला ।
है लिखा वैद्यक में देखो फिर नहीं जीता भला ॥
छः महीने झाड़ि में रह कर नहीं कैसे जला ।
बिन पिलाये दूध माता के कहो कैसे पला ॥
कृष्ण पिया पै पैदा होते वल्लभ कैसे राखे मान ।
प्रश्न तीसरा हमारा सुनिये स्वामी लगा के कान ॥ २ ॥

पुण्डरीक विट्ठल जी ने ये वल्लभ से क्यों कहा वचन ।
विवाह अपना कीजिये विवाह अपना साथ लगन ॥
फिर वल्लभ ने कहा ये था सुनिये स्वामी ताप हरन ।
कौन करेगा पतित हूं विवाह मेरा हूं निर्धन ॥
शेर—फिर कहा विट्ठल ने वल्लभ से वचन मुसक्याय के ।
ब्याह तेरा होयगा काशी के भीतर जाय के ॥
वंश चलता क्या वो विट्ठल का कहो दर्शाय के ।
क्या वो वल्लभ पिंड देता सुत गया में जाय के ॥

उनको क्या कहीं करो ना करो बोलिये विट्ठल भगवान ।
प्रश्न तीसरा हमारा सुनिये स्वामी लगा के कान ॥ ३ ॥

कौन २ से शास्त्र पढ़े वल्लभ उनका कीजे वर्णन ।
विवाह किसकी किया कन्या के संग थी कौन वरन ॥
कहां २ दिग्विजय किये और कहां २ किये देशाटन ।
कौन कौनसे किये गुरू औ फिरे कहो वो किस वन वन ॥
शैर—ब्रह्मचारी कब तलक वल्लभ रहे बोलो जरा ।
और गृहस्थी आश्रम के वर्ष तक देखो करा ॥
रूप वानप्रस्थ का कै साल तक कहिये धरा ।
बन के संन्यासी कहो कै वर्ष तक दुःखको भरा ॥
मानाने क्यों नहीं जिमाया संग वल्लभ को कहो सुजान ।
प्रश्न तीसरा हमारा सुनिये स्वामी लगा के कान ॥ ४ ॥

तुम कहते हो फिरते २ विद्या नगर पहुंचे जा कर ।
फिर वल्लभ ने किया वाद देवी से ये कस कर के कमर ॥
चार संप्रदायवालोंने किया तिलक कहां है इसकी खबर ।
कौन शास्त्र में लिखा है उसको दिखाइये होगा आदर ॥
शैर—चार संप्रदा की मतिके तुम कहो हाजिर थे नर ।
है ये बिलकुल झूंठ देखो किया है तुमने जिकर ॥
औ कहो सूरत में तापी संग सखिया ले सुघर ।
आग वल्लभ के उगीं पंखा करन हो के निडर ॥
इसी से निश्चय हुआ झूठ विद्यार्थी विट्ठ वल्लभको जान ।
प्रश्न तीसरा हमारा सुनिये स्वामी लगा के कान ॥ ५ ॥

अब करुणाकर कहिये स्वामी कहांहै वोजी विद्यानगर।
या पूरब में कहो पश्चिम में या दक्षिण में या उत्तर ॥
नहिं देखा भूगोल के भीतर कौन द्वीपमें है वो किधर।
विद्या नगरके कहो राजाको काहू नामहू मुझे फिकर ॥
शेर—बैठ के जो तुमने चोराशी कही हैगी मिसाल।
वो नहीं मिलतीहैं पूरी हैं कहां स्वामी कृपाल ॥
बैठकों में वो जो लीला की थी बल्लभने कमाल।
सत्यथी या थी वो मिथ्या या रचा परपंच जाल ॥
नाम कहो बल्लभके जन्मका कहूँ मिलाकट गुरु महान।
प्रश्न तीसरा हमारा सुनिये स्वामी लगा के कान ॥६॥

कवित्त।

लछमन भट्ट निज देश त्याग आय बसे। काशिका पुरी जहां शंकर को धाम है॥ यवन नरेश आय प्रजाको कलेश दीन्हों। भागे जहां तहां मिलो जाको शुभ ठामहै॥ पत्नी समेत भट्ट भजे निज प्राण हेत। दक्षिण दिशा को जन्म भूमि शुभ धाम है॥ मारगमें गर्भस्त्राव गारूजी को गिरो। रह्यो षट् मास को नवासों कछु काम है॥१॥

फेर षट् मास मांहि लौटे भट्ट दक्षिण से। मारग में पायो पुत्र शोभित अनूप है॥ आस पास

अग्नि ताको मध्यमें परो। सो देख, आपनोही मान दया आनी खात धूप है ॥ उरसों लगाय कुच युगल पिवाय भट्ट। पत्नी हरखाय देखो उत्तम स्वरूप है॥ बड़ो भागवन्त तेज दीपत दिगन्त मानो पूरो कोई सन्त या अनन्त रूप भूप है ॥२॥
पुत्र के समान कोन्हों सकल विधान सोई। वल्लभ सुजान भयो जग यश छायो है॥ मारग चलाय शिष्यन बनाय देश। दच्छिण औ पश्चिम लों आपनो बनायो है ॥ तिनही के बंश आज लों गुसांईं सरूप सकल बिराजैं देश देशन को भायो है ॥ आगे कुछ और बात लिखत सुहाई सोतो बांचिये अनूप जासों हिय हुलसायो है ॥३॥
मास षट् बारो बाल जीवत न काहू भांति। सकल सुजानन ने ग्रंथ लै दिखायो है॥ बन में अकेलो छोड़ जोपै जाय जननी ताहि। तौऊ जीव धारणकहो कैसे कर लखायो है ॥ याको यहां कारण बिचारैं गे सुजान लोग। वल्लभ अब लख्बाजूने गर्भ तेन जायो है ॥ नारी व्यभिचारिणी को गर्भ रहो काहू भांति। लोक के कलंकते सुबन में बहायो है ॥ ४ ॥
लोक के कलंकते सु बन में बहायो। पुत्र वत्सला

कारण सनेह कछु आयो है। करके विचार वन जीवनते बचाइवे कों। पावक सुचारो घोर कोट सो लगायो है॥ गई निज धाम सुत मानो भट्ट लछमन को। विधवा को गर्भ सुवल्लभ कहायो है। रहो सुत वेचवे सें प्रेम अति भट्ट जी को। तासे पुत्र आपनो सुसवम जतायो है॥ ५॥

जेते वर्ण शंकर ते बड़े ई प्रतापी भये। सकल सुबुद्धिन के उर भैये छायो है॥ जैसे पंच पांडव अपने पिता के भये। इन्द्र आदि देवतन ते भारत सुनायो है॥ व्यास सुत भये कैवर्त्तिक सुता के जाके। सकल पुरान भाखे सुन सुख पायो है॥ ऐसे भये ईशा विन पति की कुमारीहो तें। जाकी मति सर्व भूमि मंडल में छायो है॥ ६॥

ख्याल रंगत लंगड़ी।

ग्रन्थ वो शुद्धाद्वैत और का है या नाथ तुम्हारा है।
कृपा दृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है॥ टेक॥
लिखा है उसमें कृष्णमई सब जगत कृष्ण बतलाया है।
कृष्ण रूपधर जीव वो सब के बीच समाया है॥
[illegible] समाया है।
[illegible] काया है॥

शेर—ग्रन्थ ये किस संप्रदा का है कहो स्वामी कृपाल ।
चाहे जिसका ग्रंथ हो अपनाही करलेते कमाल ॥
तुमतो आपी कृष्णहो नन्दलाल जी देखो गोपाल ।
फिर ये क्यों मायारची फैलायाक्यों धोखेका जाल ॥
ब्रह्मवादियों का ये ग्रंथ है हमने खूब बिचारा है ।
कृपा दृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है ॥ १ ॥
कहो कौनसे लिखा शास्त्र में तिलक छाप कंठीमाला ।
चेला चेली बनाये के तुमने कपट जाल सब पर डाला ॥
चर्नोदक धोती का पिलाना लिखा कहां पर है लाला ।
जूंठ खिलाना बनेहो ईश्वर खुला तुम्हारा भण्डाला ॥
शेर—बैठ गद्दी पर गोसांईं जी बना अपना जमाल ।
पानको चाबनलगे बस कर लिया ओठोंको लाल ॥
पीक जो थूकी गोसांईं जी ने दी टपकाय राल ।
चाटने चेले लगे बस ले के वो मूना उगाल ॥
है ये बाममारग की शाखा कब जो पंथ तुम्हारा है ।
कृपादृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है ॥ २ ॥
ग्रंथ तुम्हारा है जो स्वामी बिलकुल नर्क निशानी है ।
सुना न देखा ग्रन्थ में मैंने ऐसी ऐंचातानी है ॥
भरा हुआ व्यभिचार से पाया कल्पित और कहानी है ।
अधर्म चित में समाजावे जो देखे उसको प्रानी है ॥
शेर—फिर भई कामावशक्ती जा लिया गोलोक चर ।
गोपियों को जो हुई थी काम की चेरी मगर ॥

स्वामिनी को क्यों भई चन्द्रावली को क्यो सुकर ।
कृष्ण तो गोलोक में रहते सदा ले चक्र कर ॥
प्रथम बार ले जन्म जनी वृषभान के घर पगधारा है ।
कृपादृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है ॥ ३ ॥
दूजे लक्ष्मनभट्ट के घर फिर क्यों जन्मी राधा प्यारी ।
मृत्युलोक में गोपियां क्यों आईं देखो भारी ॥
सकल गुसाईं हैं गोपी तो क्यों नहिं बन लेते नारी ।
पुरुषवो सनके क्यों दिखलाते हैं वो छवि मयकोप्यारी ॥
शैर—कृष्ण क्या हो गये नपुंसक क्या रहा ना काम है ।
छोड़ के गोलोक देखा आके गोकुल ग्राम है ॥
गोपियां औ ग्वाल रहु गोलोक में विश्राम है ।
बैल पाढ़े का कहो गोलोक में क्या काम है ॥
कौंच से कौंच छुटैगा कथहूं सत्य वचन उच्चारा है ।
कृपादृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है ॥ ४ ॥
सत्य कहो गोलोक पाओ चमन बाग हरयाना है ।
पशु पक्षी भी वास करते क्या अजायब खाना है ॥
त्याग के हिन्दू ग्रन्थको तुमने रचा दिया मनमाना है ।
कपोलकल्पित कहानी कथकर बनाय अधरम खाना है ॥
शैर—छोड़ के वेदों क मारग पंथ पाखण्डी किया ।
डिम्भ युक्ती से रचा सब के तई धोखा दिया ॥
नारियां गोलोक में थे तुम सभी कोमल हिया ।
आन के इसलोक में क्यों मरद का जामा लिया ॥

ठग २ धन क्यों किया इकट्ठा बना के ठाकुरद्वारा है।
कृपादृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है॥ ५॥

लेकिन लिया औतार मर्द का वस्तु नारियों की धारी।
खूब उड़ाते मजा बिसनी जो कहुं तुम होते नारी॥
जूड़ा बांध कर मांग सवांरी काजर कोर लगी न्यारी।
लगा के मिस्सी ओढ़ ओढ़नी बन बैठे सुन्दर प्यारी॥
शैर—नाच औ नखरे दिखाना औरतों का है करम।
आंख मटकाना यही क्या छोड़ के लज्जा शरम॥
है मनू जी ने लिखा जो मर्द का पाकर जिसम।
भेष औरत का धरे दे दण्ड राजा हो गरम॥
कहां मर्द को लिखा है ये औरत का सिंगार जो धारा है।
कृपादृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है॥ ६॥

हाथी घोड़े ऊंट पालकी ये जो रचा तुम ने बिस्तार।
नौकर चाकर तेग बंदूक तमंचा औ तलवार॥
क्या चेलों की यही सवारी करेंगी वैतरनी के पार।
लड़ेंगे यम से आप के क्या नौकर चाकर ले हथियार॥
शैर—है कठिन भवसिन्धु इसकी अगम भारी धार है।
वेद की नौका बिना मुशकिल उतरना पार है॥
औ लड़ाई यम से मुशकिल जीतना दुशवार है।
किस तरह तारेंगे बल्लभ झूठ ये गुफ़ार है॥
कहैं बिलाकट साइन कहिये ये कितनों को तारा है।
कृपा दृष्टि कर बताओ स्वामी प्रश्न हमारा है॥ ७॥

कवित्त ।

पुंडरीक विट्ठल राजी भये आपही के ग्रंथन सों बात सांची जानी मैं। बोले पुंडरीक विवाह करो नीको भांति नारी विन नाहीं सुख एको जिन्दगानी मैं। कह्यो पुंडरीक सों मैं जात मैं न रह्यो कहो कन्या के विवाहे तजी जात ने नदानी मैं। जात सों निकारे गये पुरुषा तुम्हारे तोपै बूड़ क्यों न मरो उल्लू चुल्लू भर पानीमैं ॥१॥

एकही जात फिर तीन थोक कैसे भये खान पान छोड़ो याको भेद कहो बानी मैं। एक गोकुलस्थ भये, दूजे मथुरस्थ भए, तीसरे गोसांई भयें, आपनी नदानी मैं। देश तैलिंग मैं न ऐसी रीति देख परै दोष भयो कासू भये जात भ्रष्ट थानी मैं। आपस की फूट सों तुम्हारो गयो भंडा फूट डूब क्यों न मरो उल्लू चुल्लू भर पानी मैं ॥२॥

गोकुल सों मथुरा मैं आय के गोसांई आप भोजन के हेत जात मध्य बैठे जानी मैं। जात सों निकारे यासों पातर पनारे पास धरी बात सांची देखी ग्रंथन बखानीमैं। क्रोधह्वै गोसांई उठ गोकुल को भाज चले साथ गये गोकुलस्थ तिन

को प्रमानी मैं । जोपै बात सांचो होय नेकहू न सांची तो डूब क्यों न मरी उल्लू चुल्लू भर पानी मैं ॥ ३ ॥

झाड़े ह्वै कै बाहिर गुसांई जी पधारैं जबै चेला और चेली सब तहां बैठे आन है । हाथनमें जल कछू शेष बच जात ताहि छिड़के सब ऊपर जो अशुचि महान है । सौंच शेष जलको सु चर्णामृत तुल्य अहो धर्म के विरुद्ध करै क्रियो न सकान है । पूछैं हमताको प्रभु उत्तर बताय दीजे इनहू सब बातन में वेद को प्रमान है ॥ ४ ॥

गुरू के शरीर मांहि ऊपर के अंगन ते नीचेके अंग सोतो अति शुचिमान है । झूठोही दतौन को प्रसाद महा भाषत है सेवक लगाय माथे राखत ज्यौं प्रानहै ॥ याही तैं चेली तन ऊपरके अंगन को नीचे दे अंगन को राखे उर ध्यान है । पूछैं हम ताको प्रभु उत्तर बताय दीजे इनहू सब बातन में वेद को प्रमान है ॥ ५ ॥

गुप्त स्थान को सुमूंड़ कीये चेलन को देत वाहैं कीजो यत्न उत्तम महान है । सोने सों मढ़ाय पहिराय दीजो कंठ मांहि भूत प्रेत आगत न

लागत मसान है । बाधा भग जायगी भवन की तुम्हारी कहा पार औ परोसिन को सुखद बखान है । पूछें हम ताको प्रभु उत्तर बताय दीजे इन हू सब बातन में बेद को प्रमान हैं ॥ ६ ॥

रबिते लगाय राहु केतु आदि जेते ग्रह बाधा करें शिष्य कोइ उपाय पूंछे आन है । सातहो स्वरूपन की सेवा करो नीको भांति याते श्री वल्लभ को राखो उरध्यान है । सातहो ग्रह सो तो सातहो स्वरूप भये तेल पोवे बारे शनि रूप को महान है । राहु केतु कोहै मौन मन में बसाये रहे यामें चार वेदन में कौन सो प्रमान है ॥७॥

सूरज अनिष्ट आवैं गिरधर की पूजा करौ चंद्रमा में गोविंद और बाल कृष्ण भाम है । बुद्ध शुद्ध होइबे को गोकुल नाथ भजो गुरू को मनावे रघुनाथही को कामहै । यदुनाथ पूजे ते अरिष्ट शुक्र कृत जात शनि के सताये को बताये घनश्याम है । राहु केतु रहे ताकी ठौर दोनों भ्रात कहे बाल कृष्न लाल औ गोपाल सुखधाम है ॥ ८ ॥

सिष्टर बुलाकट कूं राहु केतु मध्यम है अति

ही सतावे ताको कियो चाहे दान है। तिल क टु तेल लोह दच्छिणा समेत लेके आपकी बताइये चढ़ाऊं शीश आन है। सुभग मसूर को बनाय मीन पीन दीन दान को तो जाहिर ये ग्रंथन नखान है। चेलन को चाहिये कि आपही के आगे धरें आपहू बताइये ये वेद को प्रमान है ॥ ९ ॥

रूप की उजागरि ही नागरी सुनाथजी के अंग में समानो पति सहित सुजान है। यवन नरेश निज डाढ़ी के केशन सों मंदिरकूं झारे जहां नाथ राजें आन है। माला अंगीकार करी जाय के पहाड़न में कौन रह्यो नाम ग्राम योगी को ब- खान है। ऐसी २ दंभही की बातें लिखी ग्रंथनमें इनहू सब बातन में कहांको प्रमान है ॥ १० ॥

आज्ञा माध्वेंद्र पुरीजी को श्रीनाथ दीन्हीं म- लया गिरि चन्दनको लाओ सुखमान है। बैठक बनाओ सब पूजो औ पुजाओ द्रव्य अधिक कमा- ओ खाओ माल तो महान है। आवैं नित दर्शन कूं इन्द्र आदि देव सबै ऐसो सब शिष्यनके चि- त्त में समान है। बैठक है काको औ स्वरूप है

काको यामें वेद औ पुरानहू को काहुक प्रमान है ॥ ११ ॥

भागवत मांहि व्यास जीने अष्ट विधि भाषी प्रतिमा को पूजवो ये जानत जहान है। चौथरा औ छट्ठो न काहू ग्रंथ मांझ लिखो आपही के देखो ये अचरज महान है। कांकरोली वाले मांहि सिज्या मन्दिर में हाड़ही की प्रतिमा बनी ताको कारत बखान है। पूंछे हम ताको प्रभु उत्तर बताय दीजे इनहू सब बातनमें वेदको प्रमान है ॥ १२ ॥

यह प्रमाण श्रीमद् भागवत का है।

श्लोक—शैलीदारुमयीलौही लेप्यालेख्याश्चसैकती।
मनोमयीस्मणमयी प्रतिमाष्टविधास्मृता: ॥
चलाचलेतिद्विविधा प्रतिष्ठाजीवमन्दिरम् ॥

शामवेद की सौत्रामणि शाखा में लिखा है।

पाषाणमयिकाष्टमयी विग्रहेषुपूजा पुनर्भोग कारी मुमुक्षो:। तस्मात्यतस्वहृदयार्चन मेवनित्यंनाह्या-र्चनं परिहरेद् पुनर्भवाय ॥

प्रतिमा में भी वेद पुराण का मानना छोड़ दिया।

द्वादश में व्यासजीने भाख्ये सबै सांचीही है कलि में अनेक धूर्त मारग दिखान है। कोई

पद मांहि लिखो बेदहू को काम नाहि महा प्रभू भाषी सोई बेद के समान है। मत जो नि-कारो नारी शूद्रन के तारबे को सबै जात खैंची मति ऐसो सुखदान है। पूंछे हमताको प्रभु उत्तर बताय दीजै इनहूं सब बातन में बेद को प्रमान है ॥ १३ ॥

चारभुजा वाले ठाकुर मेरता में राजत हैं सब से पुराने यह जानत जहान है। धोबी तिन्हें भाषत श्रीनाथ जीको ऐसे जड़ महादेवजी को नाऊ कहत बखान है। भेदा भेद माने निन्दा औरहू की ठाने सहश न जाने ऐसे धूरत महान है। ईश्वर की प्रतिमा में धोबी और नाऊ होत इनहू सब बातन में बेद को प्रमान है? ॥ ६ ॥

और संप्रदाय के जे वैश्नव जगत मांहि तिनसों श्रीनाथजी यों कहत सुनायो है। वल्लभी गोसाइ न के चेला होय नीको भांति इनहीं में भक्त यहो मोहि अति भायो है। उनही के हाथ को बना-यो भोग नीको लगै करत बिचार औ अचार अ-धिकायो है। ऐसी २ गप्पैं लिखराखी निज ग्रंथ न में ईश्वर को ऐसो पच्छपाती ठहरायो है ॥१४॥

मथुरा के वल्लभ कुल बालकों की कुचाल ।

लीक २ सबही चलैं, कायर कूर कपूत ।
लीक छोड़ तीनों चलैं, सायर सिंह सपूत ॥

अब इनकी सपूतताई का बयान सुनो ॥

मथुरा निवासी परसोत्तम गुसांईजीने शिष्य सं भोगको विचार उर कियोहै। ब्राह्मणके बालकको लोभके प्रसादहीसे अपने निज घरमें बुलाय नीके लियो है । छातीसों लगाय प्रीति रीति दर्साय समुझाय भोले बालक को चुम्बनहु कियो है । पीछे दुष्ट कर्म कीन्हों धर्म को न नेक चीन्हों ऐसहू कियो है ना सकानो जाको हियो है ॥ १५ ॥

काहू ने न ऐसो काम महाही निकाम कियो दीनों चित्त सबही ने वामके सिङ्गार पै । शास्त्र में महा पाप गायो सुनि लोगन ने बालक को भोगभाषो अधिक बिगारपै। बल्लभी गोसांइन ने चेली सहवासकियो चेला नहि भोगो काहूं आपने अगार पै । कहैं गिरनारा पुत्र चित्त में विचार सदा लानत भेज बंदे इस गंदे रोजगार पै ॥ १६ ॥

उस लड़के ने बहुत धर्म उपदेश दिया फिर वही हुई कामातुराणां न भयंनलज्जा ।

बालक को अंग भंग सुनके पुलिस आई सुनके गुसाईं रंगमहल छिपानेहैं। पेश भयो इजलास में हाकिमके मुकदमा जब लोभ दैके बालक को परम सयानेहैं। आपने बचायबेकी बातें कहवाय फेर अपनेही मन्दिरको मुखिया बनाने हैं। धर्म कर्म छोड़ ऐसी २ सब बातनमें बल्लभी गुसांइन के उठत खजाने हैं॥ १७॥

आये बदनौर महाराज निज पौत्र लैके गयाके निमित्त बास मथुरा में कियो है। खान पान न्हान नीके दर्शन अनेक देखे पातक मिटायो ये प्रमोद कियो हियोहै। दर्शन गोपाललाल बाल कृष्णजी के कीन्हें इनने बिलोकि चित्त बालक पै दियोहै। बालकै रिझाय उर आनन्द बढ़ाय निज छाती से लगाय पीछे गुप्त रस पियो है॥१८॥

औरहू प्रसिद्ध मधुसूदन गोसांईजी ने सेठ उम्मानी को मनइया लाल नाम है। बीकानेरि आये भक्त परम प्रसिद्ध ताके पुत्रको लिवाय गये बृन्दाबन धाम है। बग्घी में निहार बाल शशि अनुहार कछू कीन्हों न विचार चूमो चौवानीसो चाम है। पीछे घर आय लपटाय गुदावरीजी में गोता कूं लगाय चित्त चेतो अभिराम है॥ १६॥

गिरधरलाल दन्तवक्रजी ने बम्बईमें जाय मोट पापकी कमाईहै। महाराज किशनगढ़ेशके अनुज संग चंदावाड़ी में मौजह्न उड़ाई है। ऐसे २ बहुत कुकर्म इन लोगन में चेलन की छोड़त न लोग औा लुगाई है। ताहू पै अंधे इन्हें ईश्वरही मानत हैं ताते रच कथा ये बाकट बनाई है॥२०॥

(इस सोमयज्ञ का पूरा वृत्तान्त गोस्वामी श्रीपद् भट्ट श्री गिरधर जी ने भाषा में लिखा है जिस्का प्रतिबिम्ब यह दिया जाता है)॥

सोमयज्ञ इसी से कहते होंगे हम तो ६० वर्ष के करीब हो चुकेहैं और ५० वर्षसे सत्संग इन्हीं लोगों में रहा होम जप तप की कौन कहे हमने तो कभी अगियारी करते भी इनको न देखा सिवाय रंडी भडुवे का मान और विद्वानों का अपमान तो यही सोमयज्ञ नहीं तो क्या ऐसाही इनके पुरखों ने भी किया होगा॥

ख्याल रंगत लंगड़ी।

गोस्वामी गोवर्द्धनलाल का हाल लगा कर कान सुनो।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो॥ टेक॥
रची सभा गोवर्द्धनलाल ने विचार अपने मन में कर।
बड़े बड़े वो चतुर सभा के आ बैठे देखो अन्दर॥

एक तरफ विद्वान थे बैठे जो विद्या के थे सागर।
एक तरफ वो राज सम्बन्धी सब बैठे थे आकर नर॥
शेर—बीच बैठे आ सभा के गोर्द्धन वो लाल जी।
फिर लगे कहने सबों से खोल के सब हाल जी॥
भ्रष्ट पद दादा हमारे गये जमा कर माल जी।
मोती मूंगे औ अशर्फी हीरे पन्ने लाल जी॥
सात क्रोड़ का नाथ का गहना और बहुत सामान सुनो।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो॥ १॥

यहधनसब सुकृतिमें लगाओ कहा सभामध्ये ललकार।
मन में हमने किया है मन में हमने यही विचार॥
नारायण भट्ट ने किये छत्तिस सोमयज्ञ कर के विस्तार।
गङ्गाधर ने किये अट्ठाइस सब जाने जिस्को संसार॥
शेर—तीस गणपति भट्टने किये शुद्ध अपना कर हिया।
पांच वल्लभ भट्ट ने कर यज्ञ देखो यश लिया॥
पांच लक्ष्मन भट्ट ने कर जगमें बस यश किया।
इसतरह सौ यज्ञ कर के दान पुर्षों ने दिया॥
करेंगे सब से बढ़ कर हम औ देंगे बहु विधि दान सुनो।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो॥ २॥

फिर बोले श्रीश्याम् जी पण्डित सभाबीच योंउठेपुकार।
सोमयज्ञ को कारो काशी में शिव का है दरबार॥
लक्ष्मन भट्ट संन्यास लिया जहां दियासकल पुर्षोंकोतार।
अनाथ रहती जहां वेश्या सुनिये यह बातें सरकार॥

शेर—सब सभा के लोग सुन कर बात ये परसन्द की ।
चिट्ठियां सब को लिखी अपनी मुहर सानन्द की ॥
यज्ञ अब चल के करो है बात यह आनन्द की ।
भुजा उठा बोले गोस्वामी कसम मोय वृजचन्दकी ॥
कौन कौन संग सखा चलेंगे उनका करते ब्यान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ३ ॥
प्रथम सखाका सुनोनाम जिसकोकहते हरनाथ खवास ।
सिंगी जी हैं सखा दूसरे जिनका है बहुती बिश्वास ॥
ब्यास जी सालिगराम तीसरे खास गुसाईं जी के पास ।
लक्खा मुखिया हैं चौथे सखा उदयपुर करते बास ॥
शेर—रवि जी भाई पांचवें देखो सखा हैं अति सुघर ।
और प्रोहित जी सखा छठवें प्रतापी हैं जबर ॥
सातवें राधाकिशन हैं गे दरोगा नामवर ।
लीद घोड़ों की सदा बेचा वो करते हैं सुकर ॥
सखा आठवें गट्टूलाल हैं अन्धे पर विद्वान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ४ ॥
हो आनन्द गुसाईं जीने कलम औ कागज मंगवाया ।
आठ पत्र लिख हाल सब आठ जगह पर पहुंचाया ॥
आन सखासब हाजिर हो गये शीश चरण पर झुकाया ।
सामान सारा ऊंट छकड़ों के ऊपर लदवाया ॥
शेर—कहदिया स्वामी ने मुंह से बचन मीठा बोल के ।
हाल गट्टूलाल से फिर कह दिया सब खोल के ॥

सब अनाथों को बुला कर अपने भीतर गोल के ।
देख लेना तुम करों से अंग अंग टटोल के ॥
अष्ट सखा ले संग माल काशी को किया पयान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ५ ॥

ठाट दिखाते नगर नगर हर ग्राम गुसाईं जी आये ।
लक्ष्मनपुर में आन गोमती पर डेरे वो गड़वाये ॥
घाट जहां स्त्रियों का था बस वहां पै आसन जमवाये ।
जो अंगरेजी थे अफसर वो देख भीड़ को झुंझलाये ॥
शैर—जो प्रबन्धी संघ में थे सब गुसाईं जी के यार ।
तंग कर उनके तईं दी खूब घूसों की वो मार ॥
फिर उठा डेरे वो डंडे चल दिये पैदल सवार ।
की गुसाईं जी की देखो खूब सी मिट्टी वो ख्वार ॥
अन्त ताइफे समेत भागे हो कर के हैरान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ६ ॥

लक्ष्मनपुर से धूल उड़ाते काशी जी को गये पधार ।
धूम धाम से पहुंच गये विश्वनाथ के जा दरबार ॥
सुन के वेश्या भँडुवे सारे लगे खुशी होने हरबार ।
वाह वाह रब हमारे घर बैठे दी भेज शिकार ॥
शैर—हम भी ऐसा चाहती आवे यहां बन्दा कोई ।
गांठ का पूरा हो देखो अक्ल का मन्दा कोई ॥
आंख का अंधा भी होवे पेट का गंदा कोई ।
हम फँसा लेंगी उसे बस डाल के फन्दा कोई ॥
हम भी ढूंढ़ा करती दिन में चिराग़ ले हर आन सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ७ ॥

गोस्वामी ने करी सभा फिर काशी जी के आ अन्दर ।
शम्भुकुमार शास्त्री जी भी आन के बैठे आसन पर ॥

मथुरास्थ भट्ट बैठे औ सकल शास्त्री विद्या धर ।
गट्टूलाल भी भट्ट देख लो कहलाते सब के अफसर ॥
शैर—लालपुरुषोत्तम के बैठे थे गुसाईं बंस के ।
थे गुसाईं जी के कुल सन्तान उन के अंश के ॥
जो पतित पावन कहाते हैं वो शत्रू कंस के ।
बीच बैठे थे सभा के जैसे बच्चे हंस के ॥
बैठे गोवर्द्धन लाल इन्द्र सम भरे हुये अरमान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ८ ॥

सकल शास्त्रीयोंउठबोले करना चहिये शास्त्र विचार ।
जिस से फैले जक्त में कीरति होवै ये कुल का उद्धार ॥
फिर उठ बोले खास गुसाईं जी उन से एक बार ॥
सदा शास्त्र हम सुनते आये अब कुछ ऐसा करो प्रचार ।
शैर—सिरहिला गट्टू वो लाला फिर कहा स्वामी सुनो ।
वेश्या इस नगर में जितनी हैं वो नामी सुनो ॥
उन अनाथन पर दया कीजे गरुड़ गामी सुनो ।
जानते घट घट की सब के अन्तरेजामी सुनो ॥
वो अनाथ हैं उन्हें नचाओ सुनिये सब की तान सुनो ।
सोम यज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ९ ॥

शम्भु कुमार शास्त्री जी ने खूबी गर्दन हिलाई ।
गट्टू लाल जी की खूब ही करी वो देखो बड़ाई ॥
नाम सुनो शम्भु कुमार बोले सकल अनाथों का भाई ।
इस नगरी में वेश्या बसती जितनी देखो सुखदाई ॥
शैर—हैं मसूमन औ नवाबन औ इमामन . गुल बदन ।
खुश गुलू जगमग औ गुलशन हैं बुलाकन सोसतन ॥
तारा मुन्नाजान गुमनी और फैजन खुश चलन ।
जानकी औ मानकी बिब्बन पै है बांका हुसन ॥

जोहरा मुश्तरी हैं बांकी चंचल भगो का व्यान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १० ॥

चन्दा चम्पा हीरा माणिक पन्ना बन्नो औ कुन्दन ।
गन्नो बन्नो नाजो नौखी वीवीं की बांकी चितवन ॥
जीनत श्याना भोली छुन्नो कल्लो रज्जो औ जुलफन ।
सोना रूपा औ नन्हीं फस्सो कज्जो फज्जो गुलाबिन ॥
शैर—मोती मूक्काजान देखो है गुलाबिन की वो धूम ।
बस बुला फर के गफूरन के कदम लीजे वो चूम ॥
है सदा बाहार छम्मों जान ते जानो मसूम ।
जानी रसिकों की वो नानी खूब गाती झूम झूम ॥
कमला विमला हूरन जहूरन रामकली का गान सुनो ।
सोम यज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ ११ ॥

बेगम बूटा और बसीरन वजीरन और अमीरन ।
प्यारी नसीरन और फजोहत है कुन्दन ॥
करामात की भरी करामत सट्टो मट्टो और रतन ।
लक्खी बंदी है दुल्ला और हुसैनी गुन्चे दहन ॥
शैर—तीखी सन्नो गुनिया देखो है वो मुन्नी रस भरी ।
हैं अजब गुन्नों नवेली औ चमेली वो परी ॥
हुस्न आरा रूह अफजां देख तबियत हो हरी ।
है बहारुल निशां अफजुल बदन पर जिसके तरी ॥
है वो जीनतुल निशां सितारो जानी मेरी बात सुनो ।
सोम यज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १२ ॥

जादू भरी है सितम परी वो नवाबजानी है बेगम ।
हैं विधुबदनी औ मृगनयनी जिसका है अति बदन नरम ॥
कस कटिनी गजगमनी चम्पकबरनी करती बड़ा सितम ।
चित्त चोरनि मनहू की हरनी करती वो दासीय करम ॥

शेर—इन अनाथों को बुला कर यज्ञ स्वामी कीजिये ।
कर दरश नैना सुफल मन तान सुन कर रीझिये ॥
रजत कंचन औ दुशाले दान इनको दीजिये ।
सात पीढ़ी तार अपनी जगत में यश लीजिये ॥
गंगा बीच नाच हो सब का बात हमारी मान सुनो ।
सोम यज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १३ ॥

बांध के बेड़ा बीच गङ्ग के लगी पतुरिया निरत करन ।
गो स्वामी जी बीच में बिछा के बैठे सिंहासन ॥
मुजरा होन लगा नाचने लगी सितावो औ जुलफन ।
सकल सभा के लोग देखने लगे देखने वो बन ठन ॥
शेर—देखने महफिल लगी सब रण्डियों के गात को ।
दूध का भूखा ज्यों बालक देखता यों मात को ॥
धन्य है इस यज्ञ को और धन्य है उस रात को ॥
यज्ञ की पहुंची खबर काशी में छत्तिस जात को ॥
लगे करन चरचा नर नारी सुन कर यज्ञ विधान सुनो ।
सोम यज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १४ ॥

देख यज्ञ गोस्वामी जी की अद्भुत सब लीला न्यारी ।
काशी वासी थूकने लगे सकल वो नर नारी ॥
ताल बजने लगी चौतरफ उड़ी धूल देखो भारी ।
निन्दा करने लगे सभी वो परमहंस औ ब्रह्मचारी ॥
शेर—जो भेों ला गुसाईं जी के धन आगे धरें ।
लेके उस धन को गुरू जी भेट रंडिन की करें ॥
नर्क की अग्नी से देखो ये नहीं बिलकुल डरें ।
जब गुरू पापी हुये तो शिष्य फिर कैसे तरें ? ॥
ऐसे गुरू करने से शिष्य भी पड़े नर्क दरम्यान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १५ ॥

फिर सब कहने लगीं पतुरिया हम नहीं किसी घर जाती हैं ।
आपी हम को बुलायें देखो तब इन के घर आती हैं ॥
बड़े बड़ों से चरन पादुका हम अपनी पुजवाती हैं ।
माल छीन के इन भक्तों का सिर पर धौल जमाती हैं ॥
शैर—इस हमारी रीति को सब जानते छोटे बड़े ।
हांथ बांधे द्वार पर रहते हैं ज़रवाले खड़े ॥
हम उन्हें करती नरम बस कैसे ही होवें कड़े ।
भूल जाते सब कला वो जब नजर हम से लड़े ॥
घर बैठे हम माल मँगाती हरलेती धन ज्ञान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १६ ॥
कर सम्पूरण यज्ञ गुसाईं जी संध्या फिर लगे करन ।
गायत्री को भूल भाल रांडों का लग गये ध्यान धरन ॥
लगे आचमन करने जल का और हाथ में ले सुमरन ।
गऊमुखी में डाल कर हाथ लगे संध्या वो पढ़न ॥
शैर—ओम् पद्मकार मुखललितं कपोलं अतिविसाल ।
माधुरी मूरति मनोहर मन में मेरे बस बिशाल ॥
कंचनी सर्वस्व हरिणी मस्तकं कुमकुम की भाल ।
सर्वदा तुव ध्यान हृदयं मम विराजो हंस चाल ॥
ध्यान ये कर फिर आन सभा में बैठे कर अभिमान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १७ ॥
दई लाखमुद्रा गणिकोंको दे महिफिल करदी बरखास ।
भांड़ और भडुवे सभों की पूरन की स्वामी ने आस ॥
बिदा किया गोस्वामीजी ने भडुवों को वो कर अदास ।
स्वामी जीवें कहा भडुओंने जबतक कायम जिमी अकाश ॥
शैर—हाथ शिरपै धरिके गणिका बात यों मजबूत की ।
जिस तरें लेती बलैयां मात अपने पूत की ॥

हम खड़ी खिदमत में सब बांधीहैं कच्चेसूत की ।
हो रही नगरी में चर्चा विमल यश करतूत की ॥
जनाब शालिग्राम को गणिका दे असीस वर्दान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धर ध्यान सुनो ॥ १८ ॥
कुन्दन कहने लगीं जबां से शीरीं बोली मीठे बोल ।
सबों ने दर्शन किये ये दरश हमारे हैं अनमोल ॥
गह लाला आंख के अंधे फकत लिया हाथों से टटोल ।
आंख हमारी लीजिये दर्शन कीजे आंखें खोल ॥
शेर—सुन जबां शीरीं गुसाईं जी गये सुध तनकी भूल ।
फूल बस मन में गये वो जिस तरह फूलैं हैं फूल ॥
झूमने मस्ती में लग गये हो पतुर्यन के समूल ।
काम ने बर्छी वो ले के बस दई सीने में हूल ॥
विकल हुये गो स्वामी हिरदे लगे काम के बान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धरि ध्यान सुनो ॥ १९ ॥
सब चिड़ियां उड़ गईं रहगईं नवाब बेगम वो खुर्रम ।
खुश हो के गुरू जी, हो गये हमबिस्तर बाहम ॥
लगे आलिङ्गनकरने देखो दिया शिकमसे भिड़ा शिकम ।
तर गये पुरखा सभी हमारे किया करम हमने लाहम ॥
शेर—धन्न जो पुरुषों की सो वो सुफल भई आज सब ।
बढ़ गये पुरुषे वो देखो सिद्ध भये मम काज सब ॥
है ये जाहिर तुम्हें सब रथ पालकी गजबाज सब ।
हम तुम्हारे शिष्य हैं रखलीजिये अब लाज सब ॥
उज्र नहीं चाहे जो ले लो हाजिर मम धन प्रान सुनो ।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धरि ध्यान सुनो ॥ २० ॥
धन्य धन्य कलयुग के गुरू इस काल में ऐसे गुरू रहे ।
आप भी डूबे डुबाया चेलों को सङ्ग बांह गहे ॥

जो धन तुम देते हो वैष्णव उस धनका खूं खिन्यु बहे।
आंख के अंधे कान के बहिरे देखो इन से कौन कहे॥
शेर—तुम तो धन देते उन्हें उपकार हो संसार का।
ये उसी धन से करें सतकार गणिका नार का॥
है बुलाट शोर अब तो बस तेरे इजहार का।
खूब खोला हाल बिलकुल आज लम्पट जारका॥
सत्य सत्य सब कहा साजरा पुस्ता पक्का कान सुनो।
सोमयज्ञ उन किया जैसा वैसा धरि ध्यान सुनो॥ २१॥

कवित्त।

भांड औ भवैयनके हित सदा भोजहु से अधिका जगावैं वृथा आपनी सुन्दानी मैं। रति देव रंडिन को कर्ण से कलावत को कुटनी को कल्प वृक्ष सदृश प्रमानी मैं। रास जनी हित देत रघुसि अधिक दान छीरन को बहुत दान बात ये बखानी मैं। तंगी करै देव द्विज हित देत लेत जरैं डूब क्यों ना मरौ यारो चुल्लू भर पानी मैं॥१॥

हितोपदेश।

पाठकगण! मैं न तो इनका विरोधी हूं न किसी प्रकार से इनको अपमार्ग में प्रवृत्त होने को उत्तेजना देना मेरा अभीष्ट है। मुझे इसी वस्तु के वारणार्थ यह पुस्तक निर्मित करना पड़ा है क्योंकि जब मैं इन महाराजोंकी करनी देखता हूं तो इससे मुझेकोई लाभ नहीं दीखता किन्तु लोगों का

वंचित होगा व अपर मनुष्यों से सम्मुख इस पंथ मात्र का विडम्बित किया जानाही सबसे सुनाई पड़ती है ॥

इस स्थान पर यह भी कहना अनुचित न होगा कि बहुतेरे मनुष्य यह शंका करेंगे कि मि॰ बूलाकट भी ता इसी संप्रदाय के शिष्य हैं तो क्यों इस भांति उसी मत का चरित्र व गुप्त लीलाएं एवं प्रकार से प्रकाश करते हैं ? उसका उत्तर मैं यों दूंगा कि इसमें संदेह नहीं कि ये गुसांई जी मेरे गुरू वर्ग व मैं इनका शिष्य हूं पर यदि मैं धर्म की ओर दृष्टि देता तो मुझे सत्यतासे इनके दोष कहनेसे कोई हानि नहीं जान पड़ती और नीति शास्त्र में भी तो ठीक कहा है ॥

'शत्रोरपि गुणावाच्या दोषावाच्या गुरोरपि'

हां ! इतने पर भी जो महाशय बिना समझे बूझे कहीं कान पूंछ हिलावेंगे तो उनकी मूर्खता की आकृति को मुझे विचाराग्नि को देकर उनके अज्ञान को संदग्ध करने की चेष्टा करनी पड़ेगी और मथुरादास लव जी की तरह कटिबद्ध होकर लाइबिल केस लाना पड़ेगा और इस भार को फिर अन्त में उन्हें भी उठाना पड़ेगा—कारण इसका यह है कि इन पत्रों में न तो मैंने कोई मिथ्या कल्पना प्रकाश कर दी है न झूठ मूठ ही बिना दोषके इनको दूषित किया है और जो कुछ कि इसमें लिखा है वह सब बातें स्पष्ट रीति से इनके ही मत के ग्रंथों में लिखी पाई जाती हैं। इस से यदि जो कोई मनुष्य कह भी सक्ता है तो वल्लभीय गोस्वामी

ही कुछ अधिकार रख सक्ते हैं फिर वे क्यों कहने लगी उन्हें इसपर ध्यान क्यों आवेगा ? बारम्बार मैं उन्से विनय करताहूं कि यदि कुछ भी साहस रखते हों तो इस पुस्तक के प्रश्नों का ठीक २ उत्तर दे दोष को निवारण कर शंका समाधान करदें अथवा इस्का प्रमाण दिखादें वा अपनी कादरता व अज्ञता स्वीकार करें, नहीं तो इन बातों से हाथ धोवारं इस भारथके सुमतको अपने दुष्टआचार द्वारा दूसरों के सन्मुख न हसावें औ लाज दिलवावें पर इस अपकीर्ति से शीघ्रही बचने की चेष्टा व उद्योग करें नहीं तो अब अधिक अनर्थ होचुका कदाचित् ब्रटिश सिंह की दृष्टि पड़गई तो उस समय यह सुर्मा, मांग स्त्रियों की भांति सजावट आप की वहां काम न आवेगी—इसमे जागो ! सचेत हो और सत्य पथ पर चलो तब देखो कैसा लाभ व देश का कल्याण होता है, तभी मिथ्या व सत्य आचरण का फल मिल जायगा फिर समझने की बात है मिथ्या की निन्दा किंसने नहीं की है व इससे चिढ़ किसको नहीं है विशेषतः मुझे ? उदाहरण के लिये इस स्थान पर मिथ्या प्रचारियों की दुर्गति का वृत्तान्त जैसा प्रचीन कवियों ने कहा है इस स्थान पर युगल कवित्तों में लिख कर दर्शाते हैं वस इतनही में मेरा मन्तव्य समझ लेना औ वल्लभी मतान्तर्गत जो विद्वान जन इसके प्रश्नों का उत्तर देंगे उन्हें हम धन्यावाद देंगे नहीं तो उन्हें भी पेटपालू समझ मौनावस्थित होंगे अब जरा इसे गौर से पढ़िये—

कवित्त ।

झूंठी मीठी बातें जो बनावे औ कहावे कहे रहे अप्रतिष्ठित सदाही या जहान में । मरे पीछे होत बुरी गति वाहे लोक मध्य मिलत ना चैन दिन रैन काहू आन में । भाषन कियो मिथ्या रंच मात्र धर्म सुत नर्क द्वार ह्वै के तबै मिलो देवतान में ॥ कागजपै वार्त्ता असत्य जो लिखेंगे ताको ह्वै है मुख मेरो सो ये भालस कहै कान में ॥ १ ॥

गौतम की नारि साथ कीन्हों छल इन्द्र भई अंग में सहस्र भग विदित जहान में । सीता जी को छलो दशकंध मतिमन्द अन्ध वंश नसि गयो लिखो देखिये पुरान में ॥ छलही के कारण शशि में छाई कलंक भाखहि नवीन का प्रत्यक्ष के प्रमान में । काहू सों करेगो छल छिद्र नर ताको देखो ह्वै है मुख मेरो सो कलम कहै कान में ॥ २ ॥ शेष आगे ॥

पुस्तकों की सूचीपत्र

मन बहलानेवाली हंसी दिल्लगी की और देश-